ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

भादों-आश्विन, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ६ अंक १ सितंबर 2012

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥ गुरू बिना मै नाही होर ॥
गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥ जा की कोइ न मेटै दाति ॥१॥
गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१॥रहाउ॥
गुर चरणी जा का मनु लागै ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥
गुर की सेवा पाए मानु ॥ गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥२॥
गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ गुर के सेवक की पूरन घाल ॥
गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै ॥ गुर का सेवकु दह दिसि जापै ॥३॥
गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ पारब्रहमु गुरु रहिआ समाइ ॥
कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ गुर चरणी ता का मनु लाग ॥४॥ *(पन्ना ८६४)*

गोंड राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी गुरु की महिमा का गुणगान करते हुए, गुरु और परमेश्वर को एक समान बताते हुए फरमान करते हैं कि हे मेरे मन! हर समय (सच्चे, पूर्ण) गुरु को याद रख, मुझे गुरु के बिना और कोई सहारा नज़र नहीं आता। जिस गुरु द्वारा बख़्शी हुई आत्मिक जीवन की दात को कोई मिटा नहीं सकता उस गुरु की टेक में रात-दिन रह। हे मेरे मन! गुरु और परमेश्वर को एक समान जान तथा जो गुरु को अच्छा लगे उसे ही प्रवान कर। गुरु-चरणों में जिस मनुष्य का मन लग जाता है उसके हृदय में से भ्रम का नाश हो जाता है; उसके दुख-दर्द सारे चले जाते हैं। हे मेरे मन! गुरु की सेवा द्वारा ही (आध्यात्मिक जगत में) मान-सम्मान पाया जा सकता है, अत: गुरु पर से सदा कुर्बान जा। हे मेरे मन! गुरु का दर्शन करने से मनुष्य का तन-मन खिल उठता है, वो निहाल हो जाता है। गुरु की शरण में आ जाने से मनुष्य की सारी मेहनत सफल हो जाती है। गुरु के सेवक को कोई दुख सता नहीं सकता बल्कि वो तो चारों दिशाओं में प्रकट होकर यश पाने लगता है।

पंचम गुरु जी शबद की अंतिम पंक्तियों में बयान करते हैं कि गुरु की महिमा कथन से परे होती है। गुरु परमेश्वर में समाया हुआ होता है, वो परमेश्वर का ही रूप होता है। जिन जीवों के अच्छे भाग्य हों उनका ही मन गुरु-चरणों में टिका रहता है अर्थात् वे ही सही रूप में गुरु-कृपा के पात्र बनते हैं।

विदेशों में सिक्ख-पहचान का मुद्दा

५ अगस्त, २०१२ को अमेरिका के राज्य विस्कानसिन के शहर ओक करीक के गुरुद्वारा साहिब पर हुए हमले के कारण दुनिया भर के सिक्खों में शोक की लहर फैल गयी। शांतमयी ढंग से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्मुख अरदास कर रही संगत पर अंधेधुंध गोलियां चलाना नसली भेदभाव की घिनौनी हरकत को उजागर करती है। इस घटना के दौरान अमेरिका के भूतपूर्व सेनिक वेड माईकल पेज द्वारा अपनी आटोमेटिक हैंड गन से अंधेधुंध गोलियां चलाकर ६ सिक्खों-- स. सीता सिंघ (४१ वर्ष), स. रणजीत सिंघ (४९ वर्ष), स. सतवंत सिंघ कालेका (६२ वर्ष), स. प्रकाश सिंघ (३९ वर्ष), बीबी परमजीत कौर (४१ वर्ष) तथा स. सुबेग सिंघ (८४ वर्ष) को शहीद कर दिया। इस घटना में २० से ज्यादा लोग ज़ख्मी भी हुए।

सिक्ख अपने मेहनती स्वभाव के कारण दुनिया के हर कोने को उन्नत कर रहे हैं। अपने घर-परिवार तथा रिश्तेदारों का बिछोड़ा झेलकर अन्य देशों की तरक्की में योगदान डाल रहे हैं, अपनी मेहनत सदका दिनों में ही ये तरक्की की बुलंदियों को छूते हुए खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगते हैं। इनका यही खुशहाल जीवन निठल्ले लोगों के लिए नफ़रत का कारण बन जाता है। परिणामस्वरूप उपरोक्त घटना जैसी घिनौनी हरकतों का सामना करना पड़ता है। सिक्खों को केश कत्ल करवाने, दसतार न सजाने के लिए कई ढंग-तरीकों से मज़बूर किया जाता है। सिक्खों की यह भी कमज़ोरी रही है कि वे अपने विलक्षण अस्तित्व तथा सिक्ख धर्म की विलक्षण रहु-रीतियों को दुनिया भर के लोगों को अवगत कराने में असफल रहे हैं। यह बात उस समय उभरकर सामने आई जब ९-११ के हमले के बाद सिक्खों की गलत पहचान की गयी। बहुत सारे सिक्खों को अफगानी समझकर उन पर हमले किए गये। इसके बाद सिक्ख कुछ सचेत हुए तथा उन्होंने सिक्ख धर्म की अलग अस्तित्व-हस्ती के बारे में दुनिया भर के लोगों को बताने के प्रयत्न किए। ५ अगस्त को सिक्खों पर हमला करने वाले वेड माईकल पेज को भी ९-११ की घटना से प्रभावित हुआ माना जाता है। जब यह व्यक्ति निहत्थे सिक्खों पर गोलियां चला रहा था तो अमेरिका पुलिस ने अपना फर्ज़ निभाते हुए शलाघामयी काम किया। उन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए हमलावर को काबू करने की कोशिश की। इस कार्यवाही में जहां हमलावर मारा गया, वहां पुलिस का एक कर्मचारी भी हमलावर की गोलियों से गंभीर रूप में ज़ख्मी हो गया। इस बहादुर पुलिस अफ़सर की लेफ़्टिनेंट बरायस मरफी को ९ गोलियां लगी। इस बहादुर अफ़सर की सिक्ख जत्थेबंदियों की तरफ से भरपूर प्रशंसा करते हुए दस हज़ार डालर से सम्मानित करने की भी घोषणा की गयी है।

इस दुखदायक घटना के सम्बंध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार

अवतार सिंघ जी द्वारा अमेरिका के दूतावास में मैडम पावेल को मिलकर सिक्खों की भावनायों से वाकिफ़ करवाकर विदेश में बसते सिक्खों की सुरक्षा यकीनी बनाने के लिए कहा गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा भी इस बहादुर अफसर को सोन-तगमा देने का ऐलान किया गया है। इस घटना में मारे गये रागियों के दिल्ली में रह रहे परिवारों को भी दो-दो लाख रुपये देने का ऐलान किया गया है।

इन शहीदों की याद में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर द्वारा ९ अगस्त, २०१२ को गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल में श्री अखंड पाठ के भोग डाले गये। भोग के बाद मृतकों की आंतमिक शांति तथा जाख़्मियों के सेहतयाबी के लिए अरदास की गयी। इस अरदास समागम में अमेरिकी दूतावास के मिस्टर चैड ए थोरन बैरी राजनीतिक सचिव मुकेश सलाहकार एंबेंसी ऑफ युनायटड् सटेटस ने भाग लेकर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। उन्होंने सिक्खों को विश्वास दिलाया कि अमेरिका इस दुखांत की पूर्ण रूप से जांच करवायेगा तथा जिम्मेवार व्यक्तियों को सख़्त ढंड दिया जायेगा।

इस दर्दनाक घटना पर दुख प्रकट करते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति बरॉक ओबामा द्वारा सरकारी तौर पर दुख का प्रटावा किया गया। उन्होंने आदेश जारी किया है विस्कानसिन में दिल दहला देने वाली हिंसा के शिकार लोगों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए वाईट हाऊस तथा सभी सरकार इमारतों, मैदान, सेनिक चौंकियों, जल सेना केंद्रों, सारे अमेरिकी अधिकार वाले क्षेत्रों, कोलंबिया जिले की संघीय सरकार के जल सेना जंगी बेडों समेत पूरे अमेरिका में अमेरिकी राष्ट्रीय ध्वज(झंडा) तीन दिनों तक आथा झुका रहा। इस तरह की कार्यवाही करके अमेरिका राष्ट्रपति ने सिक्खों के दिलों पर भरपूर मरहम लगाई है। समस्त सिक्ख कौम द्वारा उनकी इस कार्यवाही की भरपूर प्रशंसा की गयी है।

आज हमें जरूरत है सिर जोकड़र बैठने की, विचार करने की, देश-विदेशों में प्रतिदिन आ रही मुश्किलों का कोई ठोस हल ढूंढने की, अपनी अलग पहचान, अलग बोली, अलग सभ्याचार तथा अलग इतिहास से दुनिया के प्रत्येक मनुष्य को अवगत करवाने की, काम चाहे अति कठिन है किंतु नामुमकिन नहीं। अनेक उदाहरणें हमारे सामने हैं! जो विदेशी, सिक्ख धर्म के प्रति जानकारी प्राप्त कर लेता है, वह सिक्ख स्वरूप धारण करके गर्व महसूस करता है। अगर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं से प्रत्येक मानव वाकिफ़ हो जाये तो मुझे पूरा विश्वास है कि वह कभी भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में ऐसी कोई भी घिनौनी हरकत नहीं कर सकता। आज समय की मांग है कि हमें इस पर विचार करना ही पड़ेगा। कोई ठोस हल ढूंढना ही पड़ेगा कि दुनिया के हर कोने में सिक्ख अपनी अलग आन-शान से जीवन व्यतीत कर सकें।

विदेशी सरकारों को भी यह बात समझनी पड़ेगी कि उनके देश में मेहनत मज़दूरी करके कामयाबी को बुलंदियों तक पहुंचाने वाले इन श्रमिकों की सुरक्षा को यकीनी बनाया जाये ताकि वे और भी लगन एवं मेहनत से काम कर सकें। इनकी सुरक्षा तथा जरूरतों को मद्देनज़र रखें। इन सरकारों द्वारा यकीनी बनाया जाये जो उनका नैतिक फर्ज़ भी है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना : एक विलक्षण संपादन कला

-डॉ. जगजीत कौर*

शहीदों के सिरताज पंचम पातशाह साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने केवल ४३ वर्ष के कम समय में ही मानवता के कल्याण हित इतने महान परोपकार किए कि चिर काल तक कुल मानवता सतिगुरु जी की ऋणी रहेगी। गुरु जी का सबसे बड़ा उपकार-कार्य तो भटकती मानवता को सत्य और स्थायी सुख का मार्ग निर्देश करने वाला, दिव्य, आलौकिक, सच्ची बाणी का विशाल संकलन श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में प्रदान करना है, जैसा कि स्वयं महान गुरुदेव जी का फरमान है :

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥

(पन्ना १४२९)

जिज्ञासु-प्रेमियों को, सत्य-अन्वेषकों को, सत्य की खोज के मार्ग पर चलने वाले पथिकों को एक ऐसा थाल परोसकर दिया जा रहा है जिसमें सत्य, उस एक मात्र समर्थ शक्ति, अकाल पुरख को जानने की, उसे समझने की, सूझ-बूझ प्रदान की जा रही है; सत्य को समझकर, असीम संतोष, तृप्ति, शांति और सुकून प्रदान किया जा रहा है। एकाग्रचित्त सत्य का चिंतन-मनन करने वाला जिज्ञासु परम तृप्ति की अवस्था पर जब पहुंच जाता है, स्वाभाविक है कि चित्त की एकाग्रता उसमें विवेक व विचार-शक्ति को उद्भासित करती है। अकाल पुरख परम सत्य का अमृत नाम जीव के लिए एकमात्र जीवन आधार है। प्रेम से इस थाल में परोसे गए भोज्य पदार्थों का जो कोई प्रेमीजन नित्यप्रति प्रेम सहित इसका भक्षण करेगा, केवल खाएगा ही नहीं, अति विस्मादित हो इसके दिव्य आलौकिक रस को आत्मसात करेगा, रस की उन्मादित कर देने वाली अवस्था को अनुभूत करेगा, निश्चय ही वह लौकिक जगत के विकार-उदभूत कष्टों से निवृत हो असीम दिव्य शांति के लोक में पहुंच जाएगा। आलौकिक दिव्य रस की मंदाकिनी जिस विशाल सच्ची बाणी के ग्रंथ साहिब में प्रवाहित हो रही है उसका संकलन पंचम पातशाह जी ने कितने श्रम, कौशल और निपुण तंत्र से किया है, यह भी एक विचारणीय विषय है।

'धुर की बाणी' का ग्रंथ रूप में संकलन करने से पूर्व बाणी व्यवस्थित रूप में नहीं थी। पूर्व गुरु साहिबान बाणी-रचना करते रहे और इसे पोथी रूप में सुरक्षित रखते रहे। श्री गुरु नानक देव जी ने श्री गुरु अंगद देव जी को गुरगद्दी प्रदान करते समय उन्हें बाणी-रचना का भंडार पोथी रूप में सौंपा। इसी क्रम में श्री गुरु अंगद देव जी ने जो ६३ सलोक की रचना की आदि श्री गुरु नानक देव जी की बाणी सहित तीसरी ज्योति श्री गुरु अमरदास जी को सौंप दिए। तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने

*1801-C, Mission Compound, Near St. Mary's Academy, Saharanpur (U.P.)-247001, Mob. : 94124-80266

श्री गुरु रामदास जी को और श्री गुरु रामदास जी ने गुरगद्दी प्रदान करते समय श्री गुरु अरजन देव जी को परंपरा अनुसार बाणी सौंप दी। श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी उदासियों के दौरान मध्यकालीन प्रमुख भक्तों की बाणी एकत्रित की थी। वे जहां गए उसी क्षेत्र के प्रसिद्ध भक्त जिनकी बाणी उन्हें अपने विचारों के साथ मेल खाती दिखाई दी, उसे एकत्रित कर लिया। प्रसिद्ध पंद्रह भक्तों की जो बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है वह भी इसी प्रकार परंपरा से गुरु साहिबान से होती हुई पंचम गुरुदेव जी के पास पहुंची। तभी तो बाणी के इस विशाल भंडार को देखकर वे गद्‌गद् हो उठे और अत्यंत भावातिरेक हो उन्होंने भाव प्रकट किए :

हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥
हरि गुण गावाह सहजि सुभाइ ॥रहाउ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥ . .
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥ (पन्ना १८५-८६)

श्री गुरु अरजन देव जी को अनमोल रत्नों का खज़ाना परंपरा से ही प्राप्त हुआ। पंचम पातशाह जी स्वयं अत्यंत छोटी आयु में ही बाणी रचना करने लगे थे। उनमें तो *"तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ"* की मेधा, आध्यात्मिक शक्ति का वर्णन जो भट्ट कवि कल जी करते है, वह नितांत सत्य है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सर्वाधिक बाणी २३१३ शबद श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने संपूर्ण बाणी को एक सुंदर क्रम देने के उद्देश्य से श्री अमृतसर में (गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब के किनारे) एक शांत और एकांत स्थान का चयन किया। वहां तंबू लगाकर वे प्रात: काल से सायं काल तक बैठे रहते और भाई गुरदास जी से बाणी लिखवाते रहते। गुरुदेव जी स्वयं बोलते रहते और भाई गुरदास जी लिखते रहते। लगभग चार-पांच वर्षों की अथक लगन, परिश्रम से बाणी का यह विशाल बोहिथ सन् १६०४ ई में सम्पूर्ण हुआ। समापन-काल इसकी मूल पांडुलिपि पर अंकित है-- "सूची पत्र पोथी का ततकरा रागां दा संवत् १६६१ मिति भादों वदी एकम् १ पोथी लिखि पहुंचे।" भादों सुदी पहली को इसकी स्थापना श्री हरिमंदर साहिब में पाठ-कीर्तन-बाणी-श्रवण हित की गई।

छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब, सप्तम गुरुदेव श्री गुरु हरिराय साहिब, अष्टम गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने बाणी-रचना नहीं की। नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अत्यंत भाव-विगलित ५७ सलोक और ५९ शबद, कुल ११६ शबद-सलोक के संकलन को दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने श्री दमदमा साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पुन: संकलन करवा सन् १६०८ ई में भाई मनी सिंघ जी द्वारा इन्हें स्थान दिया। श्री दमदमा साहिब नामक स्थान पर पुनर्संकलन होने पर इसे 'दमदमा साहिब' कहते हैं। वर्तमान समय में इसी बीड़ के उतारे (प्रतिलिपि) सिक्ख जगत में पूजनीय हैं। यह विशालकाय ग्रंथ १४३० पन्नों का है और इसे ही दसवें पातशाह जी ने श्री अबिचल नगर साहिब नांदेड़ में ज्योति-जोत समाने से पूर्व गुरगद्दी पर आसीन किया। देहधारी गुरु-परंपरा समाप्त करते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही *"सभ सिक्खन को हुकम है गुरु मानिओ ग्रंथ"* गुरु मानने का आदेश दिया। वर्तमान में युगो युग अटल पावन ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही सिक्ख जगत के दिशा-निर्देशक 'शबद गुरु' हैं।

श्री गुरु अरजन देव जी ने जिस ग्रंथ साहिब का संकलन किया वह मूल रूप से ९७४ पन्नों का था। इसकी मूल प्रति श्री करतारपुर साहिब में सुरक्षित है। श्री गुरु अरजन देव जी

ने समूची बाणी को जिस कुशलता और तकनीक से एक निश्चित तंत्र में बांधकर संकलित किया है वह निश्चय ही आश्चर्यचकित कर देने वाला है। समूची काव्यमय सच्ची बाणी को इस तरह से बांधा गया है कि एक ओर तो इसमें विषय की उदात्तता और गरिमा इसे एक उच्च कोटि के महाकाव्य का गौरव प्रदान करती है और दूसरी ओर रस की निरंतरता, प्रवहमानता इसे आधुनिक जगत का श्रेष्ठ महाकाव्य सिद, करती है, इसीलिए इसे आज की **'Greatest Eipic Poetry'** कहा गया है।

सर्वप्रथम तो सारी बाणी को रागों के आधार पर संकलित किया गया है। प्रत्येक राग विशेष में बाणी का प्रारंभ श्री गुरु नानक देव जी की बाणी से किया गया है और तब क्रमश: अन्य गुरु साहिबान की बाणी है। चूंकि सभी गुरु साहिबान ने एक ही ज्योति का प्रकाश होने के कारण 'नानक' नाम से ही बाणी रचना की है, तो विशेष गुरु जी की बाणी सांकेतिक करने के लिए महला १, २, ३, ४, ५ और ९ द्वारा अंतर स्पष्ट किया गया है। ये महला क्रमश: श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी रचना है। इसी क्रम में प्रत्येक राग में यदि भक्त महापुरुषों की उस राग में रचित बाणी है तो प्रारंभ भक्त कबीर जी की बाणी से करके तत्पश्चात अन्य भक्तों की बाणी को स्थान दिया गया है। भक्त साहिबान की बाणी से पूर्व यदि उस विशेष राग में 'वार' की रचना गुरु साहिबान द्वारा हुई है तो उसे भक्तों से पूर्व स्थान दिया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल २२ वारें है। इन वारों के साथ सलोक दिए गए है। 'वार' की 'पउड़ी' उस गुरु साहिबान द्वारा रचित है जिनका शीर्षक में संकेत किया गया है, परंतु उन पउड़ियों के साथ 'सलोक' अन्य गुरु साहिबान के हैं।

बाणी का पूरा पद (शबद) जितने पदों का है इसका भी संकेत दिया गया है, जैसे दुपदे, तिपदे, चौपदे, पंचपदे, छ: पदे, असटपदियां, सोलहे, छंत। प्रत्येक राग में विशेष गुरु साहिब के पदों की संख्या देते हुए राग के अंत में उस विशेष राग में रचित गुरुओं की बाणी का कुल योग भी अंकित कर दिया गया है। पहले तो पूरे शबद में पदों की वृत्ति के अनुकूल १, २, ३, ४ आदि संकेत दिए हैं फिर पूरा शबद, समाप्ति पर उसकी संख्या अंकित की गई है; तब कुल शबदों की संख्या भी अंकित कर दी गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी रागों में निबद्ध है और इसका प्रेम सहित गायन-कीर्तन गुरु-काल से ही होता आ रहा है। गायन का आदेश श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही रहा है। श्री गुरु नानक देव जी 'धुर की बाणी' की रचना गायन करके ही किया करते थे। भाई मरदाना जी को आदेश होता था "मरदानिआ! रबाब वजा, बाणी आई आ।" गायन के मधुर रसभीगे बोल पाषाण हृदय को भी रस निमग्न कर देते थे। अत: बाणी-गायन की परंपरा सिक्ख जगत में प्रारंभ से ही रही है। श्री गुरु अरजन देव जी स्वयं सिरंदा बजाकर कीर्तन किया करते थे। भविष्य में भी इस रसमय बाणी का कीर्तन हो, इसलिए योग्य गायन संकेत दिए गए हैं। इसके लिए 'घरों' का संकेत दिया गया है। एक से लेकर सत्ररह तक के घरों का संकेत है। कुछ पड़ताल भी दिए गए हैं। बाणी को फेर-फेरकर गाना है। इसके लिए पड़तालों का संकेत भी दिया गया है। घर से तात्पर्य ताल से हैं। बाणी ताल-सुर पर गायन की जाये, ऐसे संपादकी संकेत हैं। इन संकेतों की सहायता से कीर्तनकारों को पावन शबदों का सुर, लय और

ताल बैठाने में पर्याप्त सहायता मिलती है। राग कानड़ा, कलिआन, रामकली, बसंत, सारंग, प्रभाती, मलार और धनासरी में पड़ताल है, जिसमें बाणी को पेरता-परता कर, फेर-फेरकर गायन संकेत है। बाणी की पुनरावृत्ति से गायन श्रोता व गायक को आनंद विभोर कर देता है। वारों के गायन योग्य भी संकेत हैं, जैसे *'एकु सुआनु कै घरि गावणा', 'लला बहलीमा की धुनि गावणी', 'राइ कमालदी मोजदी की धुनी ऊपरि गावणी, 'पहरिआं कै घर गावणा', 'मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी', 'आसा दी वार टुंडै असराजे की धुनि'* आदि धुनियों के संकेत गायनकर्ता की सुविधा के लिए कुशल संपादनकर्ता की ओर से दिए गए हैं।

३१ रागों में निबद्ध बाणी के साथ-साथ बीच-बीच में कुछ लोकगीत काव्य-शैलियों का भी निर्देश किया गया है। वे विशेष बाणियां लोक गीत शैलियों, काव्य रूपों पर रचित हैं और उन्हें विशेष शीर्षक दिए गए हैं, जैसे 'सिरीरागु में पहरे', 'वणजारा'; माझ राग में 'बारह माहा म:५', और 'दिन रैणि'; आसा राग में 'बिरहड़े' और 'पटी' (म:१, म:३); गउड़ी राग में 'करहले', 'बावन अखरी', 'सुखमनी' और 'थिती'; वडहंस राग में 'घोड़ीआं' और 'अलाहणीआं'; धनासरी में 'आरती'; सूही राग में 'कुचजी', 'सुचजी', 'गुणवंती'; रामकली में 'अनंदु', 'सद', 'ओअंकार', सिधगोसटि'; बिलावल में 'थिति', 'वारसत'; मारू राग में 'अंजुलीआ', 'सोलहे'; तुखारी राग में 'बारह माहा' (म:१)।

इन विशेष शीर्षकों की बाणियों द्वारा गुरु साहिब ने जहां लोकप्रचलित काव्य रूपों को स्थायी रूप से विश्व संस्कृति की स्थायी धरोहर के रूप में सुरक्षित किया है वहीं उन जन-साधारण के लिए गायन रस अनुभूति और आनंद के लिए क्षेत्र विकसित किया है जो शास्त्रीय संगीत-विधान के नियमों-उपनियमों से अनभिज्ञ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी इसी लिए जनसाधारण के लिए प्रेम, श्रद्धा और आस्था की धरोहर बनी हुई है और युगों-युगों तक बनी रहेगी। सत्य की खोज, सत्य से परिचय, सत्य को प्राप्त करने का मार्ग-निर्देशन तो बाणी द्वारा होता ही है, किंतु अत्यंत सरल-सहज लोक-धुनों में गायन कर अति साधारण जिज्ञासु रस-लाभ भी प्राप्त करता है। इसका अधिकांश श्रेय पंचम गुरुदेव जी की अद्‌भुत संपादन-कुशलता को जाता है।

संपूर्ण बाणी को एक सुंदर क्रम में विभाजित किया गया है। पन्ना १ से १३ तक मूलमंत्र, जपु जी साहिब, सो दरु, सोहिला-- प्रातः, संध्या व शयनकालीन बाणियों का संकलन है। पन्ना १४ से १३५३ तक ३१ रागों में निबद्ध बाणी है। पन्ना १३५३ से १४२६ तक सहसक्रिती सलोक महला १ और ५, गाथा, फुनहे, चउबोले (महला ५), भक्त कबीर जी के सलोक २४३, शेख फरीद जी के सलोक १३०, सवईए, स्री मुखबाक्य म:५, भट्ट साहिबान के सवईए १३३(पन्ना १३८९-१४०९), सलोक महला ९ के ५७ सलोक (पन्ना १४२६-१४२९), मुंदावणी म: ५, सलोक म:५ (तिरा कीता जातो नाही, पन्ना १४२९) रागमाला (पन्ना १४३०)। समूची पावन बाणी को अति सुंदर व्यवस्था देकर गुरु साहिब ने मुहरबंद किया; एक थाल के रूप में सजाकर जनमानस की सत्य-संतोष विचार-शक्ति को उद्‌भासित करने हेतु अनमोल, अखुट धन का खज़ाना दिया। बाणी का पावन उद्देश्य है 'मुंदावणी'। 'मुद आवणी' 'मुद' संस्कृत का शब्द है, जिसके अर्थ हैं-मुद-मुदिता-आनंद-परम हर्ष। अतीव आनंद का स्रोत यह धुर की बाणी, सच्ची बाणी गुरु साहिबान द्वारा मानवता को दिया गया एक अनुपम, विलक्षण, अद्वितीय ज्ञान-पुंज है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की गुरु-पदवी

-डॉ. तारन सिंघ*

विश्व में ग्रंथ तो असंख्य हैं, धर्म-ग्रंथ भी बहुत-से हैं, मगर 'गुरु ग्रंथ' केवल एक ही है और वो है सिक्खों का धर्म-ग्रंथ। इस बात पर विचार करना अति कठिन है कि कब और कैसे कोई 'ग्रंथ' 'गुरु' बन जाता है। यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है जब यह तथ्य सामने आता है कि १४६९ ई. से १७०८ ई. तक सिक्ख धर्म का 'गुरु' साक्षात मानव रूप में भी विद्यमान रहा, चाहे उस समय 'बाणी गुरु' का सिद्धांत भी प्रकट हो चुका था।

सिक्ख धर्म का १४६९ ई. से १७०८ ई. तक का जो इतिहास है उसमें कई मोड़ आते रहे और भिन्न-भिन्न इतिहासकारों ने उन मोड़ों को जिस रूप में देखा-विचारा उसके आधार पर समूह सिक्ख इतिहास को तीन विशेष तरह से बयान किया है। श्री बैनर्जी ने सिक्ख इतिहास की प्रगति को विकास (**Evolution of Khalsa**) माना है। सर गोकुल चंद नारंग ने इस प्रगति को परिवर्तन (**Tranformation**) माना है। प्रिंसीपल तेजा सिंघ ने इसे जिम्मादारी (जिम्मेदारी) की चेतनता (**Growth of Responsibility**) कहा है। सिक्ख इतिहास में से चाहे ये तीनों स्वरूप मिलते हैं, मगर असल बात 'जिम्मादारी की चेतनता' ही है। कोई 'ग्रंथ' तभी किसी पंथ के लिए 'गुरु' बनता है जब पंथ में जिम्मादारी की चेतनता पूर्ण रूप में आ जाती है। तब कोई लिखित विधान (**constitution**) या कानून उसे नेतृत्व देने के लिए योग्य हो जाता है। जहां जिम्मेदारी की चेतनता नहीं है वहां विधान तथा कानून के होते हुए भी पुलिस, कचहरी एवं सारा प्रबंध समाज के लिए सरल जीवन उपलब्ध नहीं करा सकते।

'ग्रंथ' तब 'गुरु' बन गया जब सिक्ख पंथ या समाज में जिम्मादारी की चेतनता पूर्ण रूप में प्रफुल्लित हुई अर्थात् जब सिक्ख समाज की आत्मा 'सिंघ' पदवी को प्राप्त हो गई। 'सिंघ' पदवी किसी ऊंची से ऊंची आत्मिक, मानसिक एवं बौधिक स्तर की परिचायक है। यह इस समाज की आत्मा की वो दशा है जब समूह समाज में सच की स्थापना के लिए जिम्मादारी की चेतनता आ गई है, जब स्वतंत्रता तथा सामाजिक जीवन समान हो गए हैं और जब सच व स्वतंत्रता के लिए आवश्यक दृढ़ता और साहस सामाजिक जीवन का अंग बन गए हैं। जब कोई समाज 'सिंघ' पदवी पर पहुंचता है तब वहां पाखंड, झूठ तथा अन्याय नहीं रह सकते। जब सिक्ख समाज की आत्मा 'सिंघ' पदवी पर पहुंची तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उससे एक प्रण लेकर उसे एक आध्यात्मिक विधान 'ग्रंथ-गुरु' के रूप में दे दिया और 'शख़्सी गुरुता' का प्रवाह समाप्त कर दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समाज की 'सिंघ' आत्मा से जो प्रण लिया वो था 'वाहिगुरु जी की फ़तह' के लिए जिम्मादारी को निभाना। जिम्मादारी यह है कि मानव

समाज में 'सिंघ' आत्मा ने 'ग्रंथ-गुरु' के आध्यात्मिक विधान की अगुआई में 'वाहिगुरु का राज्य' स्थापित करना है। जहां वाहिगुरु का राज्य होता है वहां मानव समाज का रहन-सहन, स्वभाव, सभ्याचार का स्तर वो होता है जो वाहिगुरु का अपना स्तर है और जिस स्तर का उल्लेख *"ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैर अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि"* के महावाक्य या सूत्र में बंधा है। जहां वाहिगुरु का राज्य है वहां एकता है, सकारात्मक रुचि है, अलाही स्वभाव है, निर्भयता है, *"ना को बैरी नही बिगाना"* है; सुंदरता है, स्वाधीनता है, ज्ञान एवं प्रकाश है। जब कोई समाज इस प्रकार की "जिम्मादारी की चेतनता' प्राप्त कर लेता है तब 'ग्रंथ' भी 'गुरु' हो जाता है। कौमी विकास आचरण की परिपक्वता एवं जिम्मादारी का एहसास ही वास्तव में 'गुरु' है। एक बात यह भी है कि 'ग्रंथ' भी विकास करते रहे हैं। धर्म-ग्रंथ भी अपने स्वरूप में, अपनी भावना में और अपनी आत्मा में विकासशील रहे हैं।

जब 'ग्रंथ' शुद्ध रूप में देश की समूह सियानप व सभ्याचारक प्रगति का दर्पण बन जाता है और उसमें देश तथा काल की सीमाओं से स्वतंत्र होकर किसी कौम की विकसित एवं उन्नत हुई आत्मा को प्रतिनिधित्व दिया जाता है, तो 'ग्रंथ' 'गुरु' बन जाता है। 'गुरु-ग्रंथ' की गुरुता इसी विधान पर आधारित है। यह केवल पंजाबियों का ही ग्रंथ नहीं है, न केवल किसी एक समाज का है, न किसी एक विचारधारा का है। इसमें बारहवीं सदी से लेकर सत्रहवीं सदी तक हुए भारत के प्रतिनिधि महापुरुषों को प्रतिनिधित्व दिया गया है। इसमें हिंदू, मुसलमान, सूफी, सिक्ख महापुरुषों, भक्तों आदि की बाणी शामिल है और वे सभी प्रारंभिक सिद्धांतों पर एकमत हैं। यह *"सौ सिआणिआं इको मत"* (सौ सियाने पुरुष होने पर भी उनका मत एक हो) में शक्ति है कि वो उस मत को 'गुरु' बना दे। आत्मिक अनुभवों का यह सार, जिसका प्रतिनिधित्व महापुरुषों की सम्मति है, ही गुरुता है।

सिक्ख रवैये ने ही 'ग्रंथ साहिब' की गुरुता-पदवी को स्थापित किया है और सुरक्षित किया है। इस सम्बंध में सिक्ख समाज की याचना यह है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ, दर्शन, दीदार का ध्यान मिले और 'वाहिगुरु जी की फ़तह' की जिम्मादारी निभाने का अवसर मिले-- "श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पाठ, दर्शन, दीदार दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरु।" इस आलेख में आगे विचार यह है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ, दर्शन तथा दीदार का क्या तात्पर्य है।

यूं प्रतीत होता है कि वास्तव में हर ग्रंथ, चाहे वो लौकिक विद्या का है या पारलौकिक विद्या का, को देखने (अध्ययन करना) के तीन ही दर्जे हैं। पहला दर्जा, हर ग्रंथ का पाठ किया जाता है। यह साधारण अध्ययन है या पाठ है। पाठ से अध्ययन तक तीन दर्जे हैं। हर कोई अपनी-अपनी वृत्ति के अनुसार पाठ से अध्ययन तक जाता है। पाठ करने के पश्चात हर ग्रंथ का दर्शन किया जाता है अर्थात् उस ग्रंथ में आए विषय के समूह स्वरूप को देखा जाता है-- उस ग्रंथ में कितने कांड हैं, उनको किस तरह प्रबंध में रखा गया है और ग्रंथ का समूह बाहरी कैसा है। यह जानने के बाद ग्रंथ के दीदार किए जाते हैं अर्थात् उसमें बारीकियां क्या हैं, सारे ग्रंथ की समूची शख़्सियत क्या है, उसका समूचा फ़लसफ़ा, उसकी भीतरी आत्मा आदि

क्या है, यह देखा जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ में चार बातें शामिल हैं-- श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे अरदास, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परिक्रमा तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सामने माथा टेकना।

जब नितनेम में जपु जी साहिब, रहरासि साहिब तथा सोहिला साहिब का पाठ होता है तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ध्यान में रखकर ही नितनेम हो सकता है। 'अनंदु साहिब' का पाठ इसी तरह सैकड़ों बार चिन्हात्मक रूप में लिखा हुआ है। चिन्हात्मक रूप में ही सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ तथा अध्ययन करने के बाद संगत में हाज़िर होता है। संगत में हाज़िर होते समय वो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आगे अरदास करता है। अरदास यह है कि जो शिक्षा मुझे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ में प्राप्त हुई है उस पर चलने की मुझे सामर्थ्य मिले। अरदास के बाद सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परिक्रमा करता है जिसका तात्पर्य यह है कि मैं इस शिक्षा को जीने के लिए तथा शिक्षा की जिम्मादारी निभाने के लिए तन, मन, धन कुर्बान करने के लिए तैयार हूं। फिर सिक्ख माथा टेकता है। इसका तात्पर्य यह है कि मैं प्रण करता हूं कि प्राप्त हुई शिक्षा को जीने के लिए अर्थात् उस पर अमल करने के लिए मैं अपना सब कुछ न्यौछावर कर दूंगा। पाठ करना, अरदास करनी, परिक्रमा करनी तथा माथा टेकना, पाठ पर अमल करने के ही चार अंग हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन का तात्पर्य इसके प्रत्यक्ष दर्शन हैं, इसके बाहरी स्वरूप के दर्शन हैं। इस दर्शन में चार बातें स्वाभाविक प्रत्यक्ष होती हैं। पहली बात यह प्रत्यक्ष है कि यह भारतीय आध्यात्मिक अनुभव, आत्मिक एवं धार्मिक चिंतन तथा भक्ति-भाव का प्रतिनिधि ग्रंथ है। जैसे पहले बताया गया है कि इसमें जिनका योगदान है वे भारत के अलग-अलग प्रांतों में भिन्न-भिन्न देश व काल में विचरे। अनेक प्रकार के अनुभवों में से निकलते हुए वे अंतिम सच तथा उसके मार्ग पर पहुंचे। वे अलग-अलग सभ्याचारों के हालात के प्रतिनिधि थे; वे भिन्न-भिन्न भारतीय भाषाओं के बोलने वाले थे। उनमें सांझी बात, मन्तव्य एवं आदर्श की एकता थी। वे सभी एक ही तलाश में थे और एक ही लगन में मगन थे। भक्त जैदेव जी से लेकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब तक उच्च कोटि के भारतीय महापुरुषों की प्रतिनिधिता श्री गुरु ग्रंथ साहिब में है और यह भेदभाव नहीं है कि वे हिंदू थे, मुसलमान थे, सूफी थे या सिक्ख थे। भक्त जैदेव जी के समय (११७० ई) से पहले की जो कुछ भारतीय चिंतन के अनुभव में प्रारंभिक चीज़ है, उसका सार रूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान है। भारत के सारे मतों एवं बाहर से आए इसलाम में से जो कुछ मूलगत है, उसका सार भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन का एक पक्ष उसका देश-काल से दूर होकर प्रतिनिधि होना है।

दूसरा पक्ष इस 'गुरु' के दर्शन का यह है कि इसमें जो कुछ है वो सदा के लिए सत्य है। आधार रूप से इसका आधार इतिहास नहीं है, राजनीति नहीं है, कथा-कहानी नहीं है, मानव-आत्मा की जद्दोजहद है या तजुर्बा है। मानव-आत्मा की इस तलाश का तजुर्बा है कि मनुष्य अपनी सीमा से उठकर असीम हो सकता है; वो पाबंदियों एवं कैदों से दूर जा सकता है; वो शरीर की आगोश से निकल सकता है, सचखंड

का दर्शक हो सकता है। यही उसकी मूल पदवी है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन का तीसरा पक्ष यह है कि वो सुरति, मति, मन, बुद्धि को गढ़ने वाला है, मानव-शख़्सियत को उभारने एवं निर्मित करने वाला है। उसकी शिक्षा मानव-शख़्सियत में से टेढ़-मेढ निकालकर उसे समान गोलाकार तथा सुंदरता देने वाली है। मानव-शख़्सियत को सभ्याचार बनाने में उसका राग-प्रबंध भी सहायी है। सारी बाणी ३१ रागों में है। राग मानव-शख़्सियत को कोमलता, मिठास प्रदान करता है। राग अपने आप में ही प्रभु को मिलने का एक साधन है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन में से चौथी बात यह प्रत्यक्ष होती है कि किसी भी विषय में तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। शेख फरीद जी, भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी का अनुभव अपना-अपना है। तुलनात्मक अध्ययन से उन अनुभवों में से सांझी बात मिल जाती है। इसी तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अन्य योगदानियों का अनुभव है। विशाल मन से सारे अनुभव देखने की आवश्यकता है। अन्य भी अनेक बातें हो सकती हैं मगर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का यह समूह दर्शन तो स्वाभाविक ही प्राप्त है कि यह ग्रंथ भारतीय आत्मा का प्रतिनिधि ग्रंथ है। इसका संदेश मनुष्य के लिए सदीवी रूप से कल्याणकारी है। इसका अध्ययन-मार्ग विशाल मन से तुलनात्मक अध्ययन करना है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के दीदार का भाव यह है कि उसकी जो भीतरी सुंदरता है, उसकी विचारधारा की जो सुंदरता है, उसकी जो भीतरी शख़्सियत है, उसे ढूंढा जाए। यह विश्वास उचित है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब मूल-मंत्र की ही व्याख्या है। मूल-मंत्र में जीवन के सात पक्ष और उनका निर्माण बताया हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विलक्षण भीतरी शख़्सियत का आधार मूल-मंत्र वाले ये सात पक्ष ही हैं। इनमें से एक-एक अंग अन्य अनेक स्थानों पर विद्यमान हो सकता है। ये सात के सात अंग इसी जुड़वां रूप में तथा इसी तरतीब में किसी अन्य जगह विद्यमान नहीं हैं। यह तरतीब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भीतरी शख़्सियत को विलक्षण रूप देती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का बल मूल-मंत्र या उनके अंगों को जानने पर नहीं है बल्कि इसकी रहिणी (रहन-सहन) पर है। इस रहिणी का बल नाम-सिमरन में से प्राप्त होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भीतरी शख़्सियत वो जान सकता है या उसका दीदार कर सकता है जिसने यह जीवन जीया है। *"जैसा सेवै तैसा होइ"* के समान होकर ही उसका दीदार कर सकता है। पाठ तथा दर्शन बाहर से भी हो सकते हैं मगर दीदार तो उसका रूप होकर ही हो सकता है।

सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करता है, दर्शन करता है, दीदार करता है और इस ध्यान में वो 'वाहिगुरु जी की फ़तह' के लिए 'जिम्मादारी की चेतनता' को अपने अंदर कायम रखता है। यह चेतनता ही 'ग्रंथ' को 'गुरु' बना देती है। जहां यह चेतनता नहीं है वहां 'गुरु' भी कहने-मात्र ही कह लिया जाएगा। इसके विपरीत जहां चेतनता है, वहां वो विधानों, कानूनों से अधिक समर्थ 'गुरु' है।

वर्तमान युग में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महानता

*-डॉ. गुरचरन सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का महत्त्व सदीवी काल के लिए है और इसका संदेश व जीवन-शिक्षा भी हर काल के लिए प्रासंगिक है। यह पावन ग्रंथ आधुनिक युग की सब समस्याओं के निवारण के लिए हर प्रकार की दिशा देकर मार्गदर्शन करने के योग्य है।

(अ) वर्तमान युग की दशा : वर्तमान समय पर नज़र डालें तो अब का समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सृजना एवं संकलन के समय से कोई ज्यादा अलग नहीं है। वर्तमान समय में हर जगह समूह शासन-व्यवस्था तथा समाज भ्रष्टाचार का शिकार है। धर्म, समाज एवं राजनीति में पाखंड का ज़ोर है। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा अंकित समकालीन राजाओं एवं अधिकारियों की खूंखार प्रवृत्ति आधुनिक शासन प्रणाली के हर अंग में समा गई है। उस समय की तरह अब भी शासन लोगों की रखवाली करने की जगह उलटा उन्हें कोस रहा है। समूह राज्य-प्रबंध में धर्म अथवा कर्त्तव्य की पहचान गायब है। झूठ एवं पाखंड का बोलबाला होने के कारण सच अपरिचित हो गया है। असमानता तथा अन्याय के मानव-विरोधी माहौल में मनुष्य की आज़ादी का दम घुट रहा है। समूह विश्व का माहौल अशांत है। ताकतवर एवं विकसित देश कमज़ोर व विकासशील देशों पर आर्थिक जुल्म ढाह रहे हैं। पदार्थवाद अथवा मायावाद की चमक-दमक वाली आधुनिक सभ्यता ने मानवीय संतुलन बिगाड़ दिया है। कामादिक पाश्विक प्रवृत्तियों ने जीवन के संतुलन की समानता को भंग करके मानवीय दुनिया में भागम-भाग का रूप दे दिया है। अब लोकतंत्र प्रणाली ज्यादातर देशों में प्रचलित है, मगर राज्य करने की नीति डंडातंत्र पर आधारित है। अल्पसंख्यक कौमें बहुसंख्यक कौमों से भय खा रही हैं। समूह विश्व अमन, शांति व संतुलन ढूंढने के जुगाड़ में है। ऐसे हालात में आधुनिक युग की मुख्य समस्याओं एवं उसके समाधान के बारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्शाए आदर्शों से दिशा लेकर इनका निवारण किया जा सकता है।

गुलामी की समस्या : गुलामी की समस्या मानव-जगत की एक जटिल समस्या है। पराजित समाज के धर्म में आत्मा नहीं होती, क्योंकि गुलाम व्यक्ति में मानव-हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है, जिस कारण मानव-विकास के दरवाजे बंद हो जाते हैं। जब से मनुष्य ने होश संभाली है वो आज़ादी एवं हक-सच की सुरक्षा के लिए जूझ रहा है। लोक-राज्य, समाजवाद आदि राजनीतिक आकृतियों एवं विचारधाराओं का आधार मानव-आज़ादी तथा समानता की भावनाएं ही हैं। आज जबकि दुनिया अपने अधिकारों के प्रति सजग है फिर भी जन्मजात रूढ़िगत परंपराएं उसका पीछा नहीं छोड़ रहीं। आज का मनुष्य अभी भी सांप्रदायिकता के दोष का शिकार है। गुरमति ने राजनीतिक जुल्मों, जात-पात की जंजीरों तथा पतनोन्मुखी सांप्रदायिक वर्गों के स्व-हितों की

**१८, गुरु अरजन नगर, रेलवे कालोनी, सहारनपुर-२४७००१ (उ. प्र.), फोन: ०१३२-२७२७८४३*

रुकावटों को दूर किया था। गुरबाणी ने जिस आदर्श मानव शख़्सियत की आकृति बनाई उसमें रोशन बुद्धि, उच्च आचरण, स्वतंत्रता, निर्भयता तथा आदर्श जीवन के संकल्प भरपूर मात्रा में भर दिए थे। फिर इच्छा व श्रद्धा की आज़ादी के साथ पहरावे एवं भाषा की आज़ादी, विदेशी गुलामी से आज़ादी आदि स्वतंत्र भावनाओं वाला आचरण विकसित हुआ था। मानव-आदर्शों से भरपूर गुरमति के सिद्धांत मानवता की आज़ादी, इसकी सुरक्षा के लिए आज भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं और इनके हक, सच व आज़ादी के लिए संघर्ष करने के संदेश से अलग-अलग गुलाम सभ्यताएं एवं देश दिशा ले सकते हैं।

मानव-असमानता की समस्या : आधुनिक युग में मानव-भाईचारे की समानता संकट में है। अमेरिका का नव-बस्तीवाद तथा विश्वीकरण जैसी नीतियां आर्थिक एवं सामाजिक भेदभाव पैदा कर रही हैं। जम्मू-कश्मीर, अफगानिस्तान, श्रीलंका, ईरान आदि देशों में लोग नसली झगड़ों का शिकार हैं। भारतीय विधान में भी चाहे प्रत्येक वर्ग की समानता का वायदा है, फिर भी यहां गरीब व अमीर, ग्रामीण एवं शहरी तथा जात-पात-बिरादरी के भेदभाव स्थापित हैं, जिनके कारण मानव-विकास की गति रुकी हुई है। इस संदर्भ में गुरमति के मानववादी सिद्धांत का विशेष महत्त्व है। गुरमति के आदर्श मानवीय अधिकारों तथा अवसरों की समानता को स्थिर करने वाले हैं। गुरबाणी का आदर्श *"सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ"* है। यह मानव-मानव के दरमियान पंड़ी सांप्रदायिक दूरी को खत्म कर सकता है और लोगों में आपसी सांझ के पुल का निर्माण कर सकता है।

अन्याय की समस्या : आधुनिक मानव जगत की एक अन्य समस्या अन्याय की समस्या है। दुनिया के ज्यादातर देशों में लोकतंत्र होने के बावजूद भी इंसाफ तथा मानवीय अधिकार लोगों की पहुंच से बाहर हैं। गुरमति ने विचार तथा अमल की एकसुरता पर ज़ोर दिया है और मानवता के न्याय के लिए नैतिक तथा न्यायपूर्ण अमलों पर सबसे ज्यादा महानता दी है। ये आदर्श न्याय-भरपूर मानव समाज की सृजना का मार्गदर्शक बन सकते हैं।

वास्तविक लोकतांत्रिक प्रणाली की अविद्यमानता : आधुनिक युग चाहे लोकराज्य का युग है, तानाशाही का नहीं, मगर वास्तविक लोकतंत्र अभी तक कायम नहीं हो सका। सही लोकतंत्र में मानव-व्यवहार में हिंसा के मुकम्मल खातिमे की जरूरत है और साथ ही मानव-सम्मान की अति आवश्यकता है। गुरबाणी के *"सभ महि जोति जोति है सोइ"* के मानववादी सिद्धांत के आधार पर लोगों को बराबर समझकर लोगों के हकों की रखवाली करके लोक राज्य की आत्मा को सजीव करके वास्तविक लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है।

विश्व-अशांति की समस्या : आधुनिक युग में विश्व-अशांति की समस्या गंभीर रूप धारण कर चुकी है। सारे विश्व में रगड़े व झगड़े हैं। कहीं आपसी सरहदों के झगड़े, कहीं धर्म, कहीं भाषा व सभ्याचारक मतभेदों के झगड़े हैं। सोवियत रूस की यूनियन के टूटने के कारण संसार में अमेरिका की सरदारी कायम हो गई है और पूंजीपति निज़ाम के लिए मार्ग आसान हो गया है। इसके साथ राजनीतिक विरोधों, जंगों तथा आपसी तनाव के कारण सामाजिक अशांति, नैतिक पलायन, आपसी अविश्वास का दौर बना हुआ है। ऐसा लगता है कि मानव वर्ग फिर कबीलावाद, तानाशाही एवं जंगली सभ्याचार की ओर बढ़ रहा है। समूह विश्व की एकता एवं

अमन की भावना फीकी पड़ रही है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब अलग-अलग जातियों तथा लोगों के हकों की कद्र करने का संदेश देते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षा कुल संसार की सूक्ष्म एवं स्थूल अनेकता को अलाही एकता व विस्तार के रूप में बताने वाली है। आधुनिक युग की अशांति के प्रसंग में *"ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई"* जैसे गुरबाणी के अनमोल वचन ठोस दिशा दे सकते हैं। श्री गुरु नानक देव जी का वचन *" मनि जीतै जगु जीतु"* का उपदेश हथियारों की दौड़ में लगी तथा सामूहिक तबाही के किनारे पर खड़ी मानवता के लिए अचूक औषधि हो सकता है, क्योंकि यह विचार मानव-मन में अमन व शांति पैदा करके लड़ाई को पैदा करने वाली वृत्ति खत्म करता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के वचन कि *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन"* अथवा *"जीओ और जीने दो"* मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को रोकने का सही मार्ग दिखा सकते हैं।

नैतिक जीवन-मूल्यों के पतन की समस्या : आधुनिक युग में नैतिक जीवन-मूल्यों का पतन शिखर पर है। आज के दौर में ईमानदारी, आत्म-सम्मान तथा मानवता के गुण कम हो रहे हैं। मनुष्य ईर्ष्या, नफ़रत एवं स्वार्थ का शिकार है। उसके आचरण में नम्रता नहीं, सहनशीलता की जगह अहं का बोलबाला है। मनुष्य के पास क्षमा की जगह बदले की भावना है, पराए धन की लालसा है, संतुष्टि कहीं नहीं। मनुष्य में आंखों का संयम नहीं, पराए तन की ताक है; मानव-हित नहीं स्व-हित है, कोरा ज्ञान है, किसी अच्छे विचार पर अमल नहीं। गुरमति के *'सचु अचारु', 'नाम-कमाई', 'किरत'* व *'नेक कमाई'* के साथ-साथ *"एका नारी जती होइ"* के विचार एवं नियम मानवीय नैतिकता तथा संयम के मूल्य को स्वीकार करके इस रसातल से उबार देने के योग्य हैं।

पश्चिमी सभ्याचार का हमला : पश्चिमी सभ्याचार एवं विदेशी टी.वी. चैनलों के हमले ने काम, हिंसा तथा नशों के खुले प्रदर्शन द्वारा हमारे सभ्याचार की जड़ों को हिला दिया है। नौजवान पीढ़ी चमक-दमक वाली, वाह्य आडंबर वाली पश्चिमी संस्कृति का शिकार हो रही है। पश्चिमप्रस्ती के प्रभाव तले खपतकारी एवं उपभोक्ता संस्कृति के साथ जुड़कर सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति तक जीवन-उद्देश्य को सीमित कर रहे हैं। इस होड़ में अपनी भाषा, पहरावे तथा रहन-सहन को पीछे छोड़ा जा रहा है। गुरबाणी मनुष्य को अपने सभ्याचार, अपनी भाषा तथा पहरावे के प्रति सुचेत करते हुए अपने स्वाभिमान, आत्मविश्वास की रक्षा के लिए ताकीद करती है। इस शिक्षा को व्यवहार में लाने से पश्चिमी सभ्याचारक हमले का सामना किया जा सकता है।

सामाजिक अपवित्रता की समस्या : आधुनिक युग में सामाजिक रिश्तों की अपवित्रता की समस्या गंभीर रूप धारण कर चुकी है। उच्च आचरण एवं नैतिक मूल्यों की कमी के कारण लोक-जीवन में रिश्वतखोरी, नशों का सेवन तथा ऐशप्रस्ती बढ़ गई है। पारिवारिक वफ़ादारी की अनुपस्थिति के कारण घरेलू जीवन में दरारें आ रही हैं और समाज एड्स जैसी भयानक लाइलाज बीमारियों का शिकार हो रहा है। गुरबाणी की रहित मर्यादा जीवन की पवित्रता के लिए अकसीर है। यह वर्तमान समाज को मानसिक एवं शारीरिक आरोग्यता के नियम बताते हुए अप्राकृतिक तथा गैर-व्यवहारिक, नाजायज़ सम्बंधों से रोकते हुए घरेलू जीवन में पवित्रता बनाए रखने के लिए वचनबद्ध करती है। गुरमति की नशों एवं मादक पदार्थों से परहेज़

की शिक्षा संतुलित सामाजिक जीवन की राह आसान बनाने वाली है।

धार्मिक कर्मकांड की समस्या : आधुनिक युग में धर्म के क्षेत्र में कर्मकांड प्रधान हो रहा है। धर्म अपने उद्देश्य से हटकर कुछ निश्चित रीतियों में सिमटकर रह गया है। इस स्थिति में कर्मकांड वास्तविक उद्देश्य से टूटकर सामाजिक एवं धार्मिक कट्टरवाद का रूप ले रहे हैं। इस प्रवृत्ति का शिकार होकर धार्मिक उत्तेजना में लोग कर्मकांडी धार्मिक निश्चय पर टेक रखते हुए खूनी संघर्षों में प्रवेश करने से भी गुरेज नहीं करते और घिनौने गुनाह करने तक भी रुचित हो जाते हैं। गुरबाणी, धर्म-कर्म की वैज्ञानिक पड़ताल करने की प्रवृत्ति उत्साहित करते हुए व्यर्थ के कर्मकांड एवं धार्मिक कट्टरवाद का डटकर खंडन करती है। गुरबाणी ने कोई भ्रम नहीं रहने दिया कि किसी मनुष्य को धर्मी या पापी बनाने वाले उसके कर्म ही हैं। इसके साथ मनुष्य के अंदर पारस-रूप बुद्धि-विवेक है, जिसकी सूझ में इंसान भ्रमों से बचकर व्यर्थ के कर्मकांडों एवं कट्टरवाद के कलंक से बच सकता है। गुरबाणी की यह धारणा धार्मिक कर्मकांड व कट्रवाद की रुचि को उचित मार्ग पर डाल सकती है।

समूह धर्मों को प्रफुल्लित करने की समस्या : आधुनिक युग में सब धर्मों को प्रफुल्लित करने की धारणा प्रवान चढ़ रही है। धार्मिक हिंसा, जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन का सख़्त विरोध हो रहा है। अपने धर्म का प्यार एवं सत्कार सकारात्मक रुचि है, मगर अन्य धर्मों के सिद्धांतों तथा परंपराओं के प्रति अनादर मानवता के विरुद्ध जुर्म है जिसकी प्रवृत्ति वर्तमान समय में फैल रही है। ऐसी स्थिति में गुरबाणी का बहु-धर्मी सामाजिक स्वरूप वाला आदर्श ही हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार अलग-अलग कौमों, अलग-अलग धर्मों, अलग-अलग धार्मिक पूजा-विधियों एवं धारणाओं में मिलती अनेकता प्रभु-हुक्म का चमत्कार है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का बाणी की संकलन, जिसमें सब धर्मों का सम्मान किया गया है, इस आदर्श को साकार करने की विधि समझा रही है।

मानव-गौरव बहाल करने की समस्या : समूह धर्मों का सम्मान करने से ही समूह मानव जाति की सुरक्षा, सदीवी अमन एवं मानव-गौरव बहाल हो सकता है। आधुनिक युग में सब धर्मों के सम्मान की बात उछाली अवश्य जा रही है मगर इस नियम पर अमल नहीं हो रहा। धर्म तथा धर्मों के सम्मान से टूटकर ही आधुनिक मानव-ज़िंदगी परमाणु बमों तथा मिसाइलों के भय तले आ रही है। धार्मिक मूल्यों को दरकिनार करके राजनीतिक उद्देश्य के लिए राजनीतिक अगुआ लोगों का मर्दन कर रहे हैं और लोगों की लाशों की संख्या के आधार पर अपनी शक्ति संगठित कर रहे हैं। जातीय भावों के अधीन निजी स्वार्थ की खातिर कमज़ोर देशों पर कब्जे करने, आर्थिक साधनों की लूट मचाने, मुल्कगिरी की हवस में युद्ध करके मानवता का नाश कर रहे हैं। इस भयानक एवं क्रूर स्थिति में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मानवता के संतुलित विकास, बेरोक स्वतंत्रता तथा निरंतर निर्भयता वाले वातावरण के निर्माण के लिए 'हलेमी राज' और 'बेगम पुरे' वाले संकल्प मार्गदर्शक हो सकते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की महानता है कि यह पावन ग्रंथ समूह मानवीय समस्याओं का हल पेश करने के योग्य है। इस पावन ग्रंथ के सिद्धांत सर्वसांझी मानवता की बुनियाद हैं, क्योंकि इनमें धर्म, जाति, वर्ण, देश, सभ्यता के आधार पर कोई भेदभाव नहीं।

(आ) आधुनिक युग में सिक्खी की समस्याएं तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब : आधुनिक युग में सिक्ख धर्म के सामने अनेक प्रकार की समस्याएं आ खड़ी हैं। सिक्ख पंथ की नौजवान पीढ़ी अपने प्रारंभिक अथवा बुनियादी स्वरूप तथा विशेषताओं से पथ-भ्रष्ट हो रही है। वर्तमान स्थिति में सिक्खी को कई प्रकार की चुनौतियों एवं संकट का सामना करना पड़ रहा है।

सिक्खी स्वरूप की पहचान की अस्थिरता का संकट: अब सिक्ख पर सबसे बड़ा संकट सिक्खी स्वरूप की पहचान के बिगड़ने का है। नई पीढ़ी गुरबाणी तथा अपने विरसे की पहचान की अनुपस्थिति में झूठी आधुनिकता के भ्रम में, आजाद ख़्यालों की मस्ती के बहकावे में सिक्ख के अस्तित्व व हस्ती की परिचायक सिक्ख रहित मर्यादा को तिलांजलि देकर केशों को कत्ल करवा रहा है। पदार्थक खुशहाली की दौड़ में, अमीर बनने के लिए विदेश जाने हेतु, वहां के समाज में स्वीकृत होने की खातिर नौजवान धड़ल्ले से पतितपन का शिकार हो रहे हैं। नौजवानों को यह समझाने की आवश्यकता है कि आर्थिक एवं सामाजिक स्वीकारता की होड़ तथा दौड़ मृग-तृष्णा वाली व्यर्थ खोज के समान है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संदेश आर्थिक खुशहाली तथा विकास के विरुद्ध नहीं, मगर अपने स्वाभिमान, अपनी हस्ती की पहचान गंवाकर आर्थिक खुशहाली प्राप्त करने के लिए धार्मिक तथा सामाजिक गुलामी स्वीकार करना भी निर्लज्जता है। इस शिक्षा को व्यवहारिक रूप में दृढ़ कराने से ही इस बुराई का सामना किया जा सकता है।

पृथकता तथा धार्मिक कट्टरवाद की समस्या : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सही शिक्षा से दूर जाकर सिक्ख धार्मिक वर्गों की तरफ से कट्टरवादी प्रवृत्ति के अधीन सिक्खों पर कई पाबंदियां लगाई जा रही हैं, जिसके कारण भारतीयों के कई वर्ग सिक्खों से दूरी रखने लग गए हैं। इसके साथ सिक्खों में जात-पात का भिन्न-भेद, अंतरजातीय विवाह की रुकावटें आदि पृथकता की प्रवृत्ति पैदा कर रही हैं। गुरबाणी के सर्व-सांझे एवं मानवतावादी सिद्धांतों की पूर्ण दृढ़ता से इन कुरीतियों से बचा जा सकता है।

सिक्खों में शराब तथा अन्य नशों की प्रवृत्ति का बढ़ जाना : सिक्खों में गुरबाणी की शिक्षा को भुलाकर अमीरी के पैमानों पर ऐशप्रस्ती की रुचि के अधीन शराब तथा अन्य नशों का इस्तेमाल दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षा हर प्रकार के नशों, वाह्याडंबरों तथा ऐशप्रस्ती को नकारती है। यह सादा, सहज एवं संयमी जीवन जीने का आदर्श प्रकट करती है जिसे पूर्णरूपेण अपनाने की आवश्यकता है।

गुरु-डम की समस्या : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समस्या एक परमात्मा के साथ जोड़ने वाली है और उच्च जीवन वाले गुरसिक्ख, ब्रह्मज्ञानी एवं महापुरुष गुरमति के सिद्धांत को दृढ़ कराते रहे हैं। वर्तमान समय में कई तथाकथित साधु-संत सिक्ख संगत को गुरमति से तोड़कर अपने आप को 'गुरु' बताकर गुरु-डम (देहधारी गुरु-प्रथा) को बढ़ा रहे हैं। इस समस्या का सामना ੴ का विश्वास ही है।

इस प्रकार से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाएं सिक्खी स्वरूप के प्रति एवं वर्तमान युग की सब समस्याओं का सामूहिक रूप से समाधान करने के लिए पूरी तरह से प्रासंगिक हैं। समय की आवश्यकता अपनी अंदर की कमज़ोरियों को दूर करना है, गुरमति सिद्धांतों पर पहरा देना है और इन सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करके इन पर अमल करना है।

आध्यात्मिक जीवन और शबद-गुरु सिद्धांत

*-श्री धर्मेन्द्र कुमार**

सारे जीव-जगत में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसे प्रकृति ने आध्यात्मिक जीवन जीने योग्य बनाया है। इसके अतिरिक्त अन्य प्राणी मात्र भौतिक जीवन ही जी सकते हैं क्योंकि उनमें मानव के समान बुद्धि नहीं है। मनुष्य की भौतिक क्रियाएं अन्य प्राणियों की भांति ही हैं। अध्यात्म के कारण ही मनुष्य अन्य प्राणियों से भिन्न है। आध्यात्मिक जीवन परमात्म-शक्ति निहित आंतरिक चेतना द्वारा संचालित होता है और भौतिक पदार्थ, अमीरी-गरीबी आदि का यहां कोई महत्त्व नहीं रह जाता। आध्यात्मिक ज्ञान-प्राप्त मानव अपने शरीर, भावों, संवेगों तथा संकल्पों का भली प्रकार उपयोग कर सकता है। वह कठिनाइयों से घबराता नहीं, बल्कि उनसे ऊपर उठकर कुशलतापूर्वक उनका सामना करता है।

आध्यात्मिकता : अपने असली स्वरूप को पहचानना ही आध्यात्मिकता है। इसका लक्ष्य है-- आत्म साक्षात्कार। हम आनंदस्वरूप हैं, किंतु मोह आसक्ति ने हमें इस प्रकार से जकड़ रखा है कि हम अपना वास्तविक स्वरूप ही भूल गये हैं :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
(पन्ना ४४१)

भौतिकवाद से त्रस्त मानव के लिए अध्यात्म एक जीवन-पथ है। विषयासक्ति द्वारा भ्रमित होकर हमारा चित्त विकृत हो जाता है और विवेकहीनता के वशीभूत हम विनाश की ओर अग्रसर होते हैं। इसके विपरीत 'अध्यात्म' जीवन का उन्नायक पथ है, जीवन का शुद्धिकरण है। जिस प्रकार आंख सम्पूर्ण विश्व को देखती है, लेकिन स्वयं को नहीं देख पाती, ठीक उसी प्रकार 'आत्मतत्व' आत्मनिरीक्षण व अनुभव की वस्तु है। स्वयं अंत:प्रेरणा से इसकी सिद्धि होती है। आध्यात्मिकता का संबंध किसी धर्म-विशेष, जाति अथवा क्षेत्र से नहीं है। आध्यात्मिकता विश्वव्यापी है, हर व्यक्ति के लिए एक समान है।

आध्यात्मिक जीवन में गुरु का स्थान : आध्यात्मिक जीवन में गुरु का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है और यह बात पूर्णत: मानने योग्य है कि गुरु के बिना मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन का सफल होना असंभव है :

मत को भरमि भुलै संसारि ॥
गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥ (पन्ना ८६४)

जिस प्रकार भूलभुलैया वाली इमारत के अंदर जाने और वहां से सकुशल वापस आने के लिए एक ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है जो उस इमारत के समस्त भेदों को अच्छी तरह जानता हो, उसी प्रकार जीवन को सफल बनाने के लिए ऐसे आध्यात्मिक गुरु की जरूरत पड़ती है जो जीवन-सफलता के रहस्यों से भली-भांति परिचित हो और साधक को उचित ज्ञान करा सके। गुरु के निर्देशन में ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। 'गुरु' जीवन रूपी नाव के

**शोधार्थी, गुरु नानक देव अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर-१४३००१, मो. ९५०१७३३६६०*

लिए मल्लाह भी है और पतवार भी। इस मल्लाह और पतवार के अभाव में आध्यात्मिक जीवन की नाव सांसारिक भंवर में फंसकर डूब जाती है :

बाझु गुरू डुबा संसारु ॥ (पन्ना १३८)

गुरु अपने ज्ञान एवं निर्देशन से सिक्ख के अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश कर देता है। वह सिक्ख के भौतिक नेत्रों को खोलने के साथ ही अंत:चक्षु में भी विराट ज्योति उत्पन्न कर देता है। ईश्वर क्या है, कहां है और उसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है आदि प्रश्नों के उत्तर गुरु की कृपा द्वारा सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। गुरु के बिना यह संसार अंधकारमय है चाहे अनगिनत सूर्य व चंद्रमा उदय होते रहें :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥
(पन्ना ४६३)

यद्यपि जीव ब्रह्म का ही अंश है तथापि भौतिकता के वशीभूत होकर वह आत्मस्थ चैतन्यस्वरूप परम प्रभु का साक्षात्कार नहीं कर पाता है। प्रभु-मिलाप में बाधक बने भौतिक आवरण को विच्छिन्न करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम की आवश्यकता होती है। यह शक्तिशाली माध्यम गुरु ही है।

शब्द : सामान्यत **'शब्द'** वह ध्वनि है जिससे किसी वस्तु का बोध होता है। एक या अधिक वर्णों के जोड़ को भी शब्द कहा जाता है। इस प्रकार के शब्द के दो भेद किए जाते हैं-- सार्थक और निरर्थक। हिंदी में **'शब्द'** अंग्रेजी के **word** की तरह प्रयोग किया जाता है। षट दर्शन (भारतीय दर्शन) में शब्द को प्रमाण माना गया है। यहां शब्द को आप्त वाक्य कहा गया है। यथार्थवक्ता को आप्त पुरुष कहते हैं। आप्त वाक्य आप्त द्वारा ही संभव है। यहां शब्द के दो भेद किए गए हैं-- वैदिक शब्द तथा लौकिक शब्द। वेदों को ईश्वर द्वारा उच्चरित माना गया है। अत: वेदों की प्रमाणिकता निश्चित व असंदिग्ध है। लौकिक शब्द यथार्थवक्ता, दयालु महापुरुषों के वाक्यों को कहा गया है।[१] पतंजलि योग दर्शन में **'शब्द'** को आकाश तत्व का परिणाम तथा पांचों तन्मात्राओं में से एक माना गया है।[२]

*गुरबाणी अनुसार **'शबद'** :* गुरबाणी में शबद को अत्यंत व्यापक रूप में लिया गया है। यहां **'शबद'** अनादि है, नित्य है, सर्वव्यापी है, अविनाशी है और सृष्टि की उत्पत्ति का स्रोत है :

-कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥ (पन्ना ३)
-उतपति परलउ सबदे होवै ॥
सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ (पन्ना ११७)

यह **'शबद'** परमात्मा आप ही है, जिसे **'ओअंकार'** कहा गया है। गुरबाणी में ओअंकार इस सर्वव्यापी **'शबद'** को ही अभिव्यक्त करता है, इसीलिए जहां एक **'शबद'** से सृष्टि की उत्पत्ति बताई गयी है वहीं **'ओअंकार'** से भी इसकी उत्पत्ति का उल्लेख है :

ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥
ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥
ओअंकारि सैल जुग भए ॥
ओअंकारि बेद निरमए ॥ (पन्ना ९२९)

'शबद' हुकम रूप में सारी सृष्टि के अंदर समाया हुआ है। वह नाम रूप में चारों दिशाओं में हर जगह विद्यमान है, कण-कण में व्याप्त है :

चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं ॥ (पन्ना १२७५)

गुरबाणी में 'शबद' को अमृत कहा गया है। 'शबद' ही अमृत है, इसके अतिरिक्त कोई अन्य अमृत नहीं है। 'शबद' रूपी अमृत का प्रवाह निरंतर जारी है :

-अंम्रित एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥
(पन्ना ६४४)

-झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा ॥
मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ (पन्ना १०२)

'शबद' ज्योति रूप है जो अज्ञानता रूपी भय का खंडन कर देता है। जिस प्रकार अंधेरे में पड़ी रस्सी को सर्प समझ लेने से भय उत्पन्न होता है और प्रकाश द्वारा वास्तविक स्थिति की समझ आ जाने पर भय दूर हो जाता है, उसी प्रकार 'शबद' रूपी ज्योति के प्रकाश में अज्ञानता रूपी अंधेरे का भय दूर हो जाता है :

सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥
(पन्ना ८४३)

'शबद' 'गुरु' भी है। 'शबद' रूपी 'गुरु' के बिना अज्ञानता का अंधकार दूर नहीं हो सकता। गुरु के बिना जगत माया के प्रभाव से बौराया हुआ फिरता है :

-सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)

- सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ (पन्ना ६३५)

शबद गुरु : श्री गुरु नानक देव जी का गुरु-सिद्धांत अन्य मतों की अपेक्षा भिन्न है। यहां शरीर 'गुरु' नहीं है। चाहे देखने में यह प्रतीत होता है कि श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक 'देहधारी गुरु' रहे हैं, पर ऐसा नहीं है। वास्तव में 'ज्योति' ही 'गुरु' है। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक एक ही 'गुरु-ज्योति' विद्यमान रही है। वही 'गुरु-ज्योति' अब श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में उपस्थित है। गुरबाणी में ज्योति की एकता की पुष्टि की गयी है :

-जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥
(पन्ना १४०८)

-जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ (पन्ना ९६६)

समस्त गुरु साहिबान की बाणी में 'नानक' नाम की ही मुहर लगी है, जो 'गुरु-ज्योति' की एकता का प्रमाण है। चूंकि 'गुरु-ज्योति' अगम-अगोचर है, इसलिए जनसामान्य को उसका अनुभव नहीं हो सकता। मानव-शरीर में प्रकाशित होकर 'गुरु-ज्योति' इंद्रियगोचर बन जाती है। 'ज्योति' उसी शरीर में प्रज्वलित होती है जो उसके योग्य होता है और जिस शरीर में 'गुरु-ज्योति' प्रकाशित होती है वह शरीर भी गुरुमय हो जाता है। ऐसे शरीर तथा उसे जन्म देने वाले माता-पिता और उस कुल को धन्य कहा गया है :

धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ ॥ (पन्ना ३१०)

श्री गुरु नानक देव जी का गुरु-सिद्धांत अत्यंत व्यापक है। यहां परमेश्वर ज्योति, गुरु, अमृत, नाम, बाणी, हुकम तथा शबद आदि में कोई मौलिक भेद नहीं है, केवल नाम का ही अंतर है। 'शबद' हुकम रूप में हर जगह विद्यमान है। 'शबद' अमृत रूप है, 'शबद' नाम है, 'शबद' बाणी है, 'शबद' गुरु रूप है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥ (पन्ना ९८२)

यह बाणी अगम-अगोचर है और आम मनुष्य इसका अनुभव नहीं कर सकता। केवल गुरु, संत, भक्त को ही इस सच्चे 'शबद' का अनुभव होता है। बाणी निरंकार है अर्थात् आकार से रहित है। यही बाणी गुरु के मुख

द्वारा उपदेश के रूप में प्रकट होकर अनुभव योग्य बन जाती है। श्री गुरु नानक देव जी ने इसे खसम की बाणी कहा है :

-जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ (पन्ना ७२२)

-हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ (पन्ना ७६३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी उसी अगम-अगोचर, हुकम रूप, निरंकार, अमृत-बाणी का ही प्रकट रूप है। यह अकथ की कथा है। उस सर्वव्यापी अदृश्य 'शबद-गुरु' को अक्षरों और ध्वनि के माध्यम से दृश्य व श्रव्य रूप प्रदान किया गया है। यह 'शबद-गुरु' का स्थूल है।

सम्पूर्ण विचार में स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष निकलकर सामने आता है कि आध्यात्मिकता मानव जीवन का उन्नायक पथ है, परम तत्व की खोज ही इसका लक्ष्य है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुरु रूपी माध्यम की विशेष आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक मार्ग अत्यंत कठिन है। खंडे की धार से भी अधिक तेज व बाल से भी ज्यादा बारीक है यह मार्ग। इस पर चलने के लिए इसी मार्ग के अनुरूप बनना पड़ता है। ऐसे विषम मार्ग पर चलने के अनुकूल बनाने वाला माध्यम 'शबद-गुरु' ही है। 'शबद-गुरु' से अधिक उपयुक्त कोई अन्य माध्यम नहीं हो सकता।

संदर्भ-सूची :

१. चंद्रधर शर्मा, भारतीय दर्शन : आलोचना और अनुशीलन, पृष्ठ १८६-८७

२. सुरेश चंद्र श्रीवास्तव्य शास्त्री (व्याख्याकार), पंतजलियोगदर्शनम्, पृष्ठ २२५

श्री गुरु तेग बहादर जी को नमन

*-श्री रूप किशोर गुप्ता**

जिसकी गौरव-गाथा गाता, धरती का कण-कण है।
ऐसे गुरुवर तेग बहादर, को शत बार नमन है।
बना अमृतसर और महान, ऐसे सुत को पाकर।
गाते हैं जिसकी यश-गाथा, दिनकर और निशाकर।
जिसके जयकारों से गुंजित, धरती और गगन है।
ऐसे गुरुवर तेग बहादर, को शत बार नमन है।
दीन-दुखी की दशा देख, मन करूणा से भर आया।
करने को उद्धार जगत का, निज सर्वस्व लुटाया।
त्याग तपस्या में रत जिनका, रहा सदा जीवन है।
ऐसे गुरुवर तेग बहादर, को शत बार नमन है।
मानवता का और बलिदान का, जिन्होंने पाठ पढ़ाया।
जड़ता के तम को मिटाकर, शान-मार्ग दिखलाया।
ऐसे गुरुवर के चरणों में, अर्पित तन-मन-धन है।
ऐसे गुरुवर तेग बहादर, को शत बार नमन है।
दया, न्याय, सत्कर्म, क्षमा को, सच्चा धर्म बताया।
अन्यायी- अत्याचारी का, जिसने गर्व मिटाया।
जिसकी बलिदानी गाथा को, गाता सकल भुवन है।
ऐसे गुरुवर तेग बहादर, को शत बार नमन है।

**गोलागंज, बहजोई, जिला मुरादाबाद-२०२४१० (उ. प्र.) मो. ९३६८२-१८२०५*

आवहु संत पिआरिहो . . .

*-डॉ. मधु बाला**

सिक्ख पंथ के तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी का जन्म ८ ज्येष्ठ, संवत् १५३६ (५ मई, १४७९) को गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ। आपके पिता का नाम भाई तेजभान (क्षत्रिय) तथा माता का नाम सुलक्खणी था। आपका विवाह सन् १५०२ में बीबी राम कौर (मनसा देवी) के साथ हुआ। आपके दो पुत्र--बाबा मोहन तथा बाबा मोहरी; दो पुत्रियां--बीबी दानी और बीबी भानी पैदा हुईं। आप बहुत ही नम्र स्वभाव के साथ एकाग्र मन से सेवा करने में तत्पर रहे। गुरु जी के जीवन की एक घटना है जो इनकी सहजता और सहनशीलता पर प्रकाश डालती है। एक बार ये अपने गुरु श्री गुरु अंगद देव जी को स्नान करवाने के लिए जल ला रहे थे। अंधेरे में जुलाहे की खड्डी के खूंटे से आपको ठोकर लगी और आप गिर पड़े। जुलाहे ने पूछा कौन है? तो जुलाही ने उत्तर दिया, "होगा अमरू निथावा! इस वक्त और कौन हो सकता है?" श्री गुरु अमरदास जी ने पुनः जल की गागर लेकर गुरु जी को स्नान करवाया। प्रातः काल दीवान के पश्चात् जब गुरु जी को इस घटना का और जुलाही द्वारा कहे अपशब्दों का पता चला तो गुरु जी ने ये शब्द उचारे, "श्री अमरदास जी निमाणिआं दे माण, निथाविआं दे थान, निआसरिआं दे आसरे, निओटिआं दी ओट अते पीरां दे पीर समरथ पुरख हन।" (अर्थात् श्री गुरु अमरदास जी अभिमान रहित व्यक्तियों के मान हैं, जिनके पास रहने की जगह नहीं उनके लिए आश्रयस्थल हैं, जिनका कोई सहारा नहीं है उनके लिए सहारा हैं, बेआसरा लोगों का आसरा हैं, पीरों के पीर और समर्थ पुरुष हैं।)

श्री गुरु अमरदास जी ने बहुत सारी बाणी भावी पीढ़ी को प्रदान की। इनके द्वारा रचित बाणी में 'अनंदु' बाणी का सर्वाधिक पाठ किया जाता है। 'अनंदु' बाणी की पउड़ी ९ से लेकर २४ तक परमात्मा का स्तुति-गान इस प्रकार है :

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥
कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥
(पन्ना ९१८, ९२२)

हे संतो! आओ मिलकर उस अकथनीय, अनिर्वचनीय परमात्मा की कहानी कहें। उस 'अकथ' की कहानी कहकर यह जानें कि उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है। हम तन-मन-धन गुरु को सौंपकर केवल उसके आदेश का पालन करें, उसकी आज्ञा का पालन करें, सच्ची बाणी का गायन करें। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि इस प्रकार से हमें यह अधिकार प्राप्त हो जाता है कि हम अकथनीय परमात्मा की कथा कहें। हे मन! उस परमात्मा को चंचलता और चतुराई से नहीं प्राप्त किया जा

**आई-१०९, गली नं: ५, मजीठिया इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, फोन ०१७५-३२००९४६*

सकता। हे मेरे मन! तू सुन ले (जान ले) कि परमात्मा को प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार की चतुराई की आवश्यकता नहीं है, सब चालाकियां बेकार हैं। जीवों का मन मोहने वाली माया ही जीवों को भ्रमित करती है, ठगती है और पथभ्रष्ट करती है।

प्रभु को प्राप्त करने के लिए समर्पण-भाव की आवश्यकता होती है। हे मेरे प्यारे मन! तुम सदा-सर्वदा सत्य को अपनाओ, उसी का स्मरण करो, क्योंकि यह कुटुंब (परिवार, सगे-सम्बंधी), जो तू देख रहा है, यह तेरा साथ नहीं देगा, जो तेरे साथ नहीं जाएगा उससे चित्त लगाने का, मन रमाने का क्या लाभ? इसलिए कभी भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे कि बाद में पछताना पड़े। (हे मनुष्य) तू सतिगुरु का उपदेश सुन, वह तेरा साथ देगा। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि हे प्रिय मन! तू सदा सत्य को धारण कर। हे परमात्मा! तू अगम्य और अगोचर है। तेरा अंत कोई नहीं जानता। तू स्वयं ही अपने को जानने वाला है, पहचानने वाला है। ये जीव-जंतु सब तुम्हारी लीला हैं। फिर ये भला क्या बताने में समर्थ हो सकते हैं! कहना और देखना सब तुम्हारे द्वारा ही संभव है, जिसने इस जगत को बनाया है। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि तू सदा अगम है अर्थात् तुम तक पहुंचना कठिन है। तुम्हारा अंत किसी ने भी नहीं पाया। देवता, मनुष्य, मुनि सब अमरता की खोज कर रहे हैं, किंतु वह अमृत गुरु से प्राप्त हुआ है। मनुष्य के मन में सत्य का निवास हो और उस पर गुरु की कृपा हो, तभी अमृत की प्राप्ति होती है। सभी जीव-जंतु परमात्मा ने बनाए हैं। उनमें से कोई विरला ही गुरु का आश्रय ग्रहण करता है। गुरु की शरण में आने वाले का अहंकार समाप्त हो जाता है। उसे गुरु की शरण अच्छी लगती है। जिस पर प्रभु प्रसन्न हो उसे ही गुरु से अमृत-नाम की प्राप्ति होती है। भक्तों की चाल निराली होती है, क्योंकि उन्हें विषम मार्ग अर्थात् कठिन मार्ग ही अच्छा लगता है। वे लोभ, मोह, अहंकार और तृष्णा का त्याग करते हैं और ज्यादा नहीं बोलते। उनका रास्ता तलवार की धार से भी तीखा और बाल से भी बारीक होता है। जिसने गुरु की कृपा से अहंकार का त्याग कर दिया हो उसी में प्रभु की श्रद्धा का वास होता है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि भक्तों की चाल युगों-युगों से ही निराली रही है। हे स्वामी! तुम जैसे चलाते हो मुझे वैसे ही चलना है और अधिक मैं तुम्हारे गुणों के बारे में नहीं जानता। तुम जिस रास्ते पर चलाना चाहते हो, जो मार्ग दिखाते हो, उस पर चलना ही मेरा काम है। जिस पर तुम्हारी कृपा हो जाती है वह हरि-नाम का ध्यान करने लगता है अर्थात् प्रभु-भक्ति में अपने मन को रमाता है। जिसको परमात्मा अपनी कथा सिखा देता है वह गुरु का आश्रय लेकर सुख प्राप्त करता है। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि हे मेरे सच्चे साहिब! तुम जैसा चाहते हो, जीवों को वैसा ही मार्ग प्रदान करते हो।

यही सोहिला बाणी (परमात्मा के यशोगान की बाणी) ही परमात्मा को सुहाती है। सतिगुरु द्वारा सुनाया गया यह यश ही सदा सबको अच्छा लगता है। उन्हीं जीवों के मन में ऐसी बाणी का वास है जिन्होंने परमात्मा के दरबार से यह वर प्राप्त किया है। शेष जीव संसार में भ्रमित हुए रहते हैं, बातें करते हैं, परंतु बातों से परमात्मा नहीं मिलता। श्री गुरु अमरदास

जी कहते हैं कि बाणी का कीर्ति-गान केवल सच्चे गुरु के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। जिन जीवों ने हरि का नाम-सिमरन किया वे पवित्र हो गए। जिन्होंने गुरु की शरणागत होकर प्रभु का ध्यान किया वे भी पवित्र हो गए। वे माता-पिता और कुटुंब सहित जिस संगत में बैठते हैं, वे भी पवित्र हो जाते हैं। इस परमात्मा की चर्चा सुनने वाले, मन में बसाने वाले और गुरु के माध्यम से हरि-नाम का स्मरण करने वाले भी पवित्र हो जाते हैं, ऐसा श्री गुरु अमरदास जी का कहना है। कर्मकांड से सहज आनंद की प्राप्ति नहीं होती और जब तक सहज अवस्था नहीं होती तब तक मन में उपजे अनेक संशयों का विनाश नहीं हो सकता। मन में पैदा हुए संशय ही जीव के मन की मलिनता के कारण हैं। इस मलिनता को कर्मकांड से दूर नहीं किया जा सकता। जब जीव अपने मन को गुरु के शबद (उपदेश) रूपी जल से साफ करता है और प्रभु में ध्यान लगाता है तभी गुरु-कृपा से सहज की प्राप्ति होती है और संशयों का नाश होता है। जिन जीवों का तन उजला और मन मैला होता है वे जीवन रूपी जुए में बाजी हार जाते हैं, उन्हें तृष्णा का रोग लग जाता है और वे मृत्यु को भी याद नहीं रखते। वे परमात्मा की बातों को भुलाकर प्रेत की भांति भटकते रहते हैं। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि वे अपने जीवन को जुए की बाजी के समान हार जाते हैं। जो जीव अंदर-बाहर से निर्मल हैं वे सतिगुरु के आदेश से शुभ कर्मों की कमाई करते हैं अर्थात् पुण्य कमाते हैं। वहां मिथ्या बात की अपेक्षा मन में सदैव सत्य ही निवास करता है। वे बनजारे अर्थात् सौदागर श्रेष्ठ हैं, जिन्होंने अपने अनमोल जीवन रूपी रत्न का सही मूल्यांकन किया है, जिन जीवों का मन निर्मल है वे हमेशा ही गुरु के साथ रहते हैं। जो कोई शिष्य गुरु के प्रति उन्मुख है, गुरु की शरण में आता है, उसकी आत्मा गुरु के ध्यान में लीन रहती है। वह गुरु-चरणों को हृदय में बसाता है और वह अंतर-आत्मा में सदा उसका स्मरण करता है। वह 'मैं' अर्थात् अहंकार का त्याग कर देता है और गुरु के अतिरिक्त अन्य किसी का सहारा नहीं लेता। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि ऐसा शिष्य ही वास्तव में गुरमुख कहलाता है।

गुरु से विमुख होकर सतिगुरु के बिना वह मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। उसे अन्य कहीं से मुक्ति प्राप्त हो ही नहीं सकती, भले ही वह कितने ही विवेकवान व्यक्तियों से पूछ ले। वह अनेक योनियों में भटकता रहे, परंतु गुरु के बिना मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता। जीव की मुक्ति का एकमात्र मार्ग है सतिगुरु के शरणागत होकर शबद का अभ्यास करना। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं कि विचार करके देखो, सतिगुरु के बिना मुक्ति हो ही नहीं सकती। आओ, सतिगुरु के प्यारे शिष्यों के साथ सच्ची बाणी का गान करें। यह बाणी सभी बाणियों में शिरोमणि है। यह बाणी उन्हीं के हृदय में बसती है जिन पर प्रभु की कृपा-दृष्टि हो। वही जीव अमृत-स्वरूप बाणी का पान करके हरि-रंग में लीन रहते हैं और प्रभु की कीर्ति का गान करते हैं। जीव को हमेशा इस सच्ची बाणी का गान करना चाहिए। सतिगुरु की बाणी के अतिरिक्त अन्य बाणी कच्ची बाणी है। (जिन (ढोंगी) लोगों ने गुरुओं की नकल में 'बाणी' कही है उसे 'कच्ची बाणी' कहा है।)जो लोग इस कच्ची बाणी का उच्चारण करते हैं, उसे

श्रवण करते हैं, वे भी कच्चे हैं और उनका बाणी-उच्चारण भी कच्चा है अर्थात् मिथ्या है। वे मात्र जिह्वा से ही हरि का नाम लेते हैं, परंतु उनके मन पर उसका कोई प्रभाव नहीं होता। उसके अर्थ पर वे अमल नहीं करते। उनका मन तो माया द्वारा मोह लिया गया है और केवल रसना द्वारा ही शब्दोच्चारण होता है। श्री गुरु अमरदास जी का यह विचार है कि सतिगुरु के द्वारा कही गई बाणी के अतिरिक्त अन्य सब बाणी कच्ची है।

इस प्रकार 'अनंदु' बाणी में श्री गुरु अमरदास जी ने परमात्मा की स्तुति करते हुए, उसकी अनेक प्रकार से वंदना करते हुए, उस शक्ति का यशोगान करते हुए, उसकी प्राप्ति का मार्ग दर्शाया है। संसार की किसी भी वस्तु में, वह आनंद नहीं है जो परमात्मा की प्राप्ति में है। प्रभु-कृपा को पाने का केवल और केवल एक ही मार्ग है और वो है सतिगुरु की शरण में जाना, सरिगुरु का आश्रय लेना। सतिगुरु के पास वो सच्ची युक्ति है जो परमात्मा से हमारा सम्बंध स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। कच्चा गुरु हमें भवसागर से पार नहीं लगा सकता। जीव के लिए अनिवार्य है कि वो सच्चे गुरु की शरण ले, उसके द्वारा दिए गए उपदेशों का पालन करे, सत्य-आचरण एवं सद्आचार-युक्त जीवन व्यतीत करे। जीव की जीवन रूपी मंजिल का अंतिम पड़ाव है 'मुक्ति', जिसे पाने के लिए सतिगुरु का होना अत्यंत अनिवार्य है। यहां श्री गुरु अमरदास जी ने परमात्मा की स्तुति के साथ-साथ सतिगुरु का महत्त्व मुक्ति का मार्ग एवं जीवन रूपी जुए की बाजी को जीतने के अनेक साधन भी बताए हैं, जिनको अपनाकर जीव भवसागर से पार हो सकता है।

वातावरण का रखें ख़्याल!

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

आओ, वातावरण को साफ़ और स्वच्छ बनाएं!
यहां ज्यादा से ज्यादा पेड़ और पौधे लगाएं!
हर तरफ़ गंदा धुआं और गंदी धूल छाई!
अब साफ हवा और साफ पानी न मिले भाई!
आओ, इस धरती को हम प्रदूषण से बचाएं!
यहां ज्यादा से ज्यादा . . .
सोच-समझकर टोंटियां, पंप ओर नल चलाओ!
अमृत समान पानी को यूं ही व्यर्थ न बहाओ!
आओ, बढ़ती हुई आबादी पर काबू पाएं!
यहां ज्यादा से ज्यादा . . .
इस वायु को और ज्यादा ज़हरीली न बनाओ!
गंदा धुआं छोड़ने वाली न कोई गाड़ी चलाओ!
आओ, अपना यहां जिंदा रहना न मुश्किल बनाएं!
यहां ज्यादा से ज्यादा . . .
इस धरती को हर हाल में बचाना पड़ेगा!
हरेक को एक-एक पौधा यहां लगाना पड़ेगा!
आओ, पर्यावरण को खुशबूओं से महकाएं!
यहां ज्यादा से ज्यादा . . .
हमें पशु-पक्षियों का ख़्याल भी रखना होगा!
हरेक जीव के लिए सबको दया-प्यार सिखाएं।
यहां ज्यादा से ज्यादा पेड़ और पौधे लगाएं!

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

भक्त धंना जी

*-सिमरजीत सिंघ**

भारतीय धार्मिक सिद्धांत में ज्ञान-मार्ग, कर्म-मार्ग तथा उपासना-मार्ग से विकास करते हुए भक्ति लहर का विकास हुआ है। इन पहले मार्गों में दार्शनिक अध्ययन, मूर्ति-पूजा, कर्मकांड आदि तरीकों से परमात्मा की उपासना की जाती थी। इन मार्गों में पंडित वर्ग का विशेष स्थान था और तथाकथित छोटी जातियों वालों को इन कर्मों-धर्मों की आज्ञा नहीं थी, इसलिए बहुत-से लोग भक्ति लहर की ओर प्रेरित हुए थे। पूज्य इष्ट के बारे चाहे सगुण-निर्गुण की कल्पना चलती रही है तथा उसकी खुशी प्राप्त करने के लिए श्रद्धा, प्रेम तथा भक्ति को दरुस्त माना गया है।

भक्त रामानुज की शिष्य परंपरा में से भक्त रामानंद जी को उत्तरी भारत की भक्ति लहर के प्रवर्त्तक माना जाता है जिनसे प्रेरित होकर भक्त कबीर जी प्रमुख प्रचारक बने। एक कथन है :

भगति द्रावड़ ऊपजी, लाए रामानंद।
परगट कीआ कबीर ने, सपत दीप नवखंड।

इन भक्तों ने प्रेम-मार्ग का इतना प्रसार किया कि कर्मकांडों को बहुत दूर कर दिया। भक्त कबीर जी के अनुसार :

बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥
टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥ (पन्ना ७२७)

भक्त कबीर जी के साथ इस भक्ति लहर को देश भर में प्रफुल्लित करने वाले भक्त नामदेव जी, भक्त जैदेव जी, शेख फरीद जी, भक्त रविदास जी, भक्त धंना जी, अन्य भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान तथा सिक्ख गुरु साहिबान का विशेष योगदान है। गुरु साहिबान ने इन महान शख़्सियतों की बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संभालकर बड़ा कार्य किया जिसके कारण आज हम उनकी विचारधारा से अगवत हो रहे हैं। जिन भक्त साहिबान की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है उनमें से भक्त धंना जी की नाम बड़े प्यार-सत्कार के साथ लिया जा रहा है।

भक्त धंना जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में विद्वानों का विचार है कि भक्त जी के पूर्वज़ जयपुर जिले के गांव डिगी किशनगढ़ के वसनीक (निवासी) थे जहां से उठकर ये धूआन (बड़ा धूआं) में आबाद हो गए। भाई कान्ह सिंघ जी नाभा 'महान कोश' में लिखते हैं कि भक्त धंना जी का जन्म टांक के इलाके के धूआन गांव में संवत् १४७३ बिक्रमी को हुआ था। धूआन गांव देउली से २० मील की दूरी पर स्थित है। डॉ. शमशेर सिंघ ने प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार मैकालिफ़ के हवाले से ज़िक्र किया है :

"राजपुताने में दिउली छावनी से २० मील की दूरी पर टांक इलाके में एक गांव है,

**संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश*

जिसका नाम धूआन है। यहां एक जट्ट घराने में (भक्त) धंना (जी) १४१५ ई में पैदा हुए। अल्पायु से ही (भक्त) धंना (जी) धार्मिक लगन वाले थे। एक दिन धंने के घर का पुरोहित पूजा करने के लिए आया। पूजा की सारी रस्म धंने ने भी देखी तथा आखिर पंडित से उसने एक ठाकुर मांगा। पहले तो पंडित टाल देता रहा किंतु धंने का हठ देखकर छोटा-सा काले रंग का पत्थर उसको पूजने के लिए दे दिया।

गांव धूआन के चढ़ती दिशा में भक्त धंना जी के खेत थे, जहां भक्त जी की याद में एक थड़ा बना हुआ है, जिसके बारे में कहा जाता है कि भक्त जी इस पर बैठकर नाम-सिमरन किया करते थे तथा गायें चराया करते थे। भक्त जी का परिवार साधारण किसान परिवार था तथा खेतीबाड़ी करता था। बचपन में भक्त जी आम बच्चों की भांति अपने पिता के साथ खेती के काम तथा पशु चराने में मदद करते थे। भक्त धंना जी का मन बचपन में ही प्रभु-भक्ति में लीन रहता था। भक्त धंना जी के बारे में श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं :

धंनै सेविआ बाल बुधि ॥ (पन्ना ११९२)

भक्त धंना जी को भक्ति लहर में लेकर आने का सेहरा भक्त रामानंद जी के सर जाता है। भक्त रामानंद जी दक्षिण के रामानुज की चौदहवीं पीढ़ी के वारिस थे। 'भगतमाला' में भक्त रामानंद के शागिर्दों (चेलों) में भक्त धंना जी का ज़िक्र भी आता है :

श्री रामानंद रघुनाथ जयो दुनीआं सेतु जग तारन कीयो, अनंत नंद, कबीर, सुखा, सुरसय, पदमावती, नर हरि, पीपा, भावानंद, रैदास, धंना, सैन, सुरसारी की सरहरि और शिश प्रतिषट एक ते उजागर।

भक्त धंना जी ने भक्त रामानंद जी के पास जाकर प्रेमा-भक्ति-साधना से अन्य भक्तों में अपना अच्छा स्थान बनाया। भक्त धंना जी का ज़िक्र करते हुए श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं :

नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥
जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥
संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु करईआ ॥
नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखईआ ॥ (पन्ना ८३५)

भक्त जी के जीवन की अनेकों कहानियां लोक-मनों में उकरी हुई हैं। इनमें से एक घटना का ज़िक्र करते हुए भक्त धंना जी की सिफत (प्रशंसा) में भाई गुरदास जी ने लिखा है :

बाह्मणु पूजै देवते धंना गऊ चरावणि आवै।
धंनै डिठा चलितु एहु पूछै बाह्मणु आखि सुणावै।
ठाकुर की सेवा करै जो इछै सोई फलु पावै।
धंना करदा जोदड़ी मै भि देह इक जे तुधु भावै।
पथरु इकु लपेटि करि दे धंनै नो गैल छुडावै।
ठाकुर नो न्हावालि कै छाहि रोटी लै भोगु चढ़ावै।
हथि जोड़ि मिनति करै पैरी पै पै बहुतु मनावै।
हउ भी मुहु न जुठालसां तू रुठा मै किहु न सुखावै।
गोसाई परतखि होइ रोटी खाहि छाहि मुहि लावै।
भोला भाउ गोबिंदु मिलावै ॥ (वार १०:१३)

भक्त धंना जी ने सत्य की खोज में बहुत समय व्यतीत किया तथा दूर-दूर तक यात्राएं भी की। भक्त जी ने भक्ति-भावना में आकर बहुत सारी बाणी की रचना भी की, जिसमें से श्री

गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त जी के तीन शबद हैं, जिनमें से दो शबद राग आसा में 'आसा बाणी भगत धंने जी की' शीर्षक तले दर्ज हैं। इस शबद में भक्त धंना जी ने अपने पूर्व जन्म की भटकना तथा प्रभु को प्राप्त करने के लिए विह्वलता बयान की है। भक्त जी के अनुसार जितना समय गुरु की कृपा नहीं होती उतनी देर तक प्रभु-भक्ति की समझ नहीं आती तथा न ही मन पर काबू पाया जा सकता है :

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥
लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥रहाउ॥
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥
गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥
गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥
जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥ *(पन्ना ४८७)*

भक्त धंना जी की बाणी के इस शबद के अर्थ करते हुए प्रो. साहिब सिंघ लिखते हैं कि माया के मोह में भटकते हुए कई जन्म व्यतीत हो जाते हैं। यह शरीर नाश हो जाता है। मन भटकता रहता है। धन भी टिकता नहीं। लोभी जीव ज़हर रूपी पदार्थों के लालच में रंगा गया है। इस तृष्णा के कारण मन में से अमूल्य प्रभु बिसर जाता है। हे मूर्ख मन! ये ज़हर रूपी फल तुझे मीठे लगते हैं, तुझे अच्छी विचार नहीं आती। (दैवी) गुणों से हटकर अन्य किस्म की प्रीत तुम्हारे अंदर बढ़ रही है। ये सब आवागमन का ताना बुना जा रहा है।

हे मन! तूने जीवन की युक्ति समझकर अपने अंदर स्थिर न की। तृष्णा में जलते यमों का जाल, यमों के फाहे तुझे पड़ गए हैं। हे मन! तू विष रूपी फल ही इकट्ठा कर संभालता रहा और ऐसे संभालता रहा कि तुझे परम पुरख प्रभु ही भूल गया।

जिस मनुष्य को गुरु ने ज्ञान का प्रवेश रूपी धन दिया है उसकी सुरति प्रभु से जुड़ गई। उसके अंदर श्रद्धा बन गई, उसका मन प्रभु के साथ एक हो गया, उसको प्रभु का प्यार, प्रभु की भक्ति लगी, सुख के साथ सांझ बन गई। वह माया से रज गया तथा बंधनों से मुक्त हो गया। जिस मनुष्य के अंदर प्रभु की सर्वव्यापकता जोति टिक गई उसने माया में न छले जाने वाले प्रभु को पहचान लिया।

मैंने (भक्त धंना जी) भी उस प्रभु का नाम रूपी धन ढूंढ लिया है, जो सारी धरती का आश्रय है। मैं संत-जनों को मिलकर प्रभु में लीन हो गया हूं।

दूसरे शबद में भक्त धंना जी कहते हैं कि जब परमात्मा सब को रोज़ी-रोटी देता है तो उसकी भक्ति क्यों न की जाये जबकि उसके बिना अन्य कोई प्रतिपालक नहीं है। परमात्मा मां के गर्भ में भी हमारी पालना करता है। परमात्मा प्रत्येक जीव की पालना करता है।

अपने शबद में भक्त धंना जी मन को संबोधित करते हुए कहते हैं कि दयावान दयालु

परमात्मा का तू क्यों नहीं सिमरन करता? किसी और की आशा न रख। समस्त संसार में भटकने के बाद वही कुछ होगा जो परमात्मा करेगा। उस प्रभु ने मां के पेट के जल में हमारा दस स्रोतों वाला शरीर बना दिया। परमात्मा मां के पेट में भी खुराक देकर हमारी रक्षा करता है। हमारा मालिक प्रभु इस तरह का दयालु है। कच्छपी पानी में रहती है। उसके बच्चे रेत में रहते हैं। उन बच्चों के पंख भी नहीं होते जिनके द्वारा उड़कर वे कहीं जाकर कुछ खा-पी सके? न ही कच्छपी के स्तन होते हैं कि वो बच्चों को दूध पिला सके। हे जीव! मन में सोच, प्रतिपालक उन बच्चों की भी पालना करता है :

रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥१॥रहाउ॥
जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥
देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥
कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ॥
(पन्ना ४८८)

पत्थर में कीड़ा छिपा रहता है। पत्थर से बाहर जाने का उसको कोई रास्ता नहीं होता। उसकी पालना भी वह पूर्ण परमात्मा करता है। (भक्त) धंना (जी) कहते हैं, हे जिंदे! तू भी न डर।

धनासरी राग में भक्त धंना जी का एक शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। इस शबद में गुरमति दर्शन का सुमेल दर्शाया गया है। सांसारिक जीवों को जीवन-निर्वाह जिन वस्तुयों की के लिए जरूरत पड़ती है भक्त धंना जी उनकी मांग परमात्मा से करते हैं। भक्त जी ने अपने इन शबदों में सांसारिक जरूरतों की पूर्ति तथा प्रभु-भक्ति का सुमेल कर दिखाया है तथा गुरमति का यही मूल आधार है :

गोपाल तेरा आरता ॥
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥रहाउ॥
दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मागउ सत सी का ॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जनु धंना लेवै मंगी ॥ *(पन्ना ६९५)*

भक्त धंना जी द्वारा प्रभु की भक्ति करते हुए उस प्रभु से जीवन की बुनियादी जरूरतों की मांग की गई है। भक्त धंना जी को यह पूर्ण विश्वास है कि जो भक्त, गुरु की भक्ति करता है, परमात्मा उसके सारे काम संवारता है, उसकी जरूरतें पूरी करता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त धंना जी की बाणी गुरमति सिद्धांत की व्याख्या तथा जिज्ञासुओं के लिए परमार्थ के रास्ते की दिशा दिखाने के लिए बहुत बड़ा योगदान डाल रही है। भक्त धंना जी भी जिज्ञासुओं को स्पष्ट दिशा प्रदान करते हैं।

लासानी सिक्ख बहादुरी का प्रतीक : साका सारागढ़ी

-बीबी मनमोहन कौर*

गुरु-पातशाहों के साजे-निवाजे सिक्खों का विलक्षण पहलू यह है कि ये मर जाना तो पसंद करते हैं किंतु जुल्म के आगे झुकते नहीं। खालसे के सृजनहार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा साजते समय सिक्खों को अमृत रूपी घूंटी देते हुए यह गुण उनमें कूट-कूटकर भर दिया, जिसके कारण सिक्ख अकेला भी लाखों-हज़ारों से टक्कर लेने की हिम्मत रखता है। ऐसे कई ऐतिहासिक कारनामे सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों में लिखे मिलते हैं कि कैसे गुरु कलगीधर के वचन "सवा लाख से एक लड़ाऊं" पर अमल करते हुए कुछेक गिनती भर सिंघों ने सरहिंद, अनंदपुर साहिब, चमकौर साहिब तथा खिदराणे की ढाब (श्री मुकतसर साहिब) आदि की जंगों में अपने से कई गुना ज्यादा दुश्मनों का मुकाबला करते हुए शहीदी जाम पीये तथा फ़तहि हासिल की। इसी परंपरा को कायम रखते हुए जनरल जगजीत सिंघ तथा जनरल हरबखश सिंघ ने दुश्मन फौज से घुटने टिकाये थे तथा कारगिल की जंग के समय भी सिक्ख रेजिमेंट द्वारा दिखाई गई बहादुरी सिक्खों की इस शानदार रिवायत को कायम रखने की जीती-जागती मिसाल है।

सिक्ख कौम संसार की एक ही ऐसी कौम है, जिसके योद्धाओं की प्रशंसा उनके विरोधी भी करते आ रहे हैं। यह यश सिर्फ सिक्ख कौम के हिस्से ही आया है। सिक्खों द्वारा समय-समय दिखाई गयी बहादुरी की गाथाओं में से सारागढ़ी की जंग एक ऐसी अहम जंग है, जिसकी चर्चा दुनिया भर में हुई। यूनेस्को द्वारा छापी गई एक पुस्तक, जिसमें अद्वितीय बहादुरी दिखाने वाली विश्व की बड़ी लड़ाइयों का है तथा सारागढ़ी की जंग भी उनमें से एक है।

देश की पश्चिमी सरहद हमेशा से दुश्मनों का सामना करती आ रही है। सारागढ़ी की लड़ाई इस बात का सबूत है कि कैसे शुरू से ही सिक्खों की मदद से ही इस सरहद से दुश्मन की घुसपैठ को रोका जा सका है। इसी सरहद पर जमरौद के किले की रक्षा करते हुए बहादुर सिक्ख स. हरी सिंघ नलूआ शहीद हुए थे। यहां तक कि महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य-काल के बाद अंग्रेज भी सिक्ख फौजियों की मदद के साथ ही इस इलाके को अपने अधीन रखने में कामयाब हुए थे। तब से लेकर अब तक देश की पश्चिमी सरहद की रक्षा सिक्ख फौजी ही आगे होकर करते आ रहे हैं।

पंजाबी विश्व कोश के अनुसार, "सारागढ़ी उत्तर-पश्चिमी सरहदी सूबे के कोहाट जिले का ऐतिहासिक गांव है, जो समाना रेंज की चोटी पर ३३.५ उत्तरी विथकार तथा ७०.४५" लंबकार

* #८३६३, गली नं: २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर-१४३००१

पर स्थित है। सारागढ़ी को वज़ीरस्तान के नाम से भी जाना जाता है। यहां वज़ीर कबीले के लोग ज्यादातर बसते हैं। इस जगह पर एक गढ़ी बनी हुई है, जो भारतीय फौज के बे-मिसाल जोश, हौसले तथा कुर्बानी का प्रकाश-स्तंभ है।"

सिक्ख कौम में शूरवीरता का गुण किसी भी जान-पहचान का मुहताज नहीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब जी के शूरवीर सिंघों का जोश महाराजा रणजीत सिंघ की खालसाई फौज में स. हरी सिंघ नलूआ तथा स. शाम सिंघ अटारी वाले के समय भी चढ़दी कला के जौहर दिखाता रहा है। इसी तरह फौज में सिक्ख कौम की हमेशा चढ़दी कला रही है। इसी को देखते हुए १ अगस्त, १८४६ ई. को सिक्ख रेजिमेंट का आधुनिक विस्तार किया गया, जिसके अधीन **Captain G Tabbs** की अगुआई में रेजिमेंट ऑफ फिरोज़पुर सिक्खस तथा **Lieutenant Colonel P Gordon** की अगुआई में रेजिमेंट ऑफ लुधियाना सिक्खस नाम की दो बटालियन अस्तित्व में आईं। इन दो बटालियनों से शुरू हुई सिक्ख रेजिमेंट अधीन आज २० बटालियनों हैं। इस सिक्ख रेजिमेंट का सेंटर आजकल रामगढ़ कैंट (बिहार) में है। सिक्ख रेजिमेंट का मोटो *"निसचै करि अपुनी जीत करों"* है। यह सिक्ख रेजिमेंट भारत की आज़ादी के पूर्व पहले एवं दूसरे विश्व युद्ध के अलावा लगभग ५० से भी ज्यादा तथा आज़ादी के बाद भारत-चीन १९६२, भारत-पाकि १९६५, भारत-पाकि १९७१ तथा कारगिल १९९९ सहित लगभग ७ लड़ाइयों में देश की हिफ़ाजत करने की मिसालयोग्य जिम्मेदारी निभा चुकी है।

सारागढ़ी की लड़ाई सिक्ख रेजिमेंट की ही एक बटालियन '३६ सिक्ख रेजिमेंट', जिसको कि अब ८ सिक्ख रेजिमेंट के नाम से जाना जाता है, के २१ सिक्ख शूरवीरों की याद को ताज़ा करती है, जिन्होंने १२ सितंबर १८९७ ई. को १०,००० के करीब पठानों तथा कबायलियों से लड़ते हुए शहीदियां प्राप्त कीं।

'३६ सिक्ख रेजिमेंट' २३ मार्च, १८८७ ई. को कर्नल जे. कुक की कमान तले जलंधर छावनी में स्थापित की गई थी। १८९१ से १८९४ ई तक आसाम की जबरदस्त बगावत को दबाने में अग्रणीय भूमिका निभाने के कारण आर्मी द्वारा सिक्ख रेजिमेंट की बेहद प्रशंसा की गई। १८९६ ई में इस रेजिमेंट को पहले कोहाट (उत्तर-पश्चिमी सीमा) तथा फिर १८९७ ई. में कोहाट से बदलकर फोर्ट लॉक हार्ट में भेज दिया गया। उस वक्त लैफ्टन कर्नल हार्टन इस रेजिमेंट की कमान कर रहे थे। सारागढ़ी पहाड़ी पत्थरों से बनाया एक छोटा सा किला था जो एक सिगनल (संकेत) चौंकी के तौर पर फोर्ट लॉक हार्ट तथा गुलिस्तान के मध्य संदेश पहुंचाने के मंतव्य के लिए प्रयोग किया जाता था। इसमें ३६ सिक्ख बटालियन के २१ सिक्ख तैनात थे।

मुहिम के दौरान ३६ सिक्ख रेजिमेंट ५-६ मील के घेरे में छोटी-छोटी पिक्टें (टुकड़ियां) समाना, पहाड़ी, कुराग, संगर, सहतोपधार तथा सारागढ़ी किला आदि में बांटी गई थीं।

अगस्त, १८९७ ई को सरहद के आरकज़ई तथा अफरीदी कबीले वालों ने युद्ध का डंका बजा दिया। उन्होंने २७ अगस्त, १८९७ ई को गुलिस्तान पोस्ट पर हमला कर दिया। कर्नल हार्टन ने अपने कुछ जवानों की मदद से अपनी पोस्ट तो बचा ली किंतु खुद जख़्मी हो गये।

उसके अगले दिन कबीले वालों ने संहार तथा सहतोपधार की पोस्टों पर हमला कर दिया, किंतु उस हमले में भी वे सफल न हो सके। फिर ३ सितंबर को कबीले वालों ने गुलिस्तान पोस्ट पर हुए दोबारा हमला करके उसको तीन तरफ से आग लगा दी। उस वक्त पोस्ट के कमांडर मेजर डेविस ने अपने आदमियों को पोस्ट से बाहर जाकर आग बुझाने के लिए कहा। कमांडर का हुक्म मिलते ही स. सुंदर सिंघ, स. हंसा सिंघ, स. जीवन सिंघ, स. गुरमुख सिंघ, स. सोभा सिंघ तथा स. भोला सिंघ ने बाहर आकर केवल आग ही नहीं बुझाई बल्कि दुश्मन के हमले को भी पूरी तरह से असफल कर दिया।

गुलिस्तान पोस्ट का कर्नल हार्टन अंधेरी रात तथा गोला-बारूद का पूरा-पूरा फायदा उठाना चाहता था, इसलिए उसने जवानों को हुक्म किया कि वे अपनी पोस्ट के बाहर जाकर आग लगाकर रोशनी करें ताकि दुश्मन का पता चल सके। इस हुक्म को मानते हुए सिपाही स. हरनाम सिंघ, स. घुल्ला सिंघ व स. वरियाम सिंघ बाहर जाकर लकड़ियां इकट्ठा करके आग लगाकर रोशनी करने में कामयाब हो गये। इस रोशनी से दुश्मनों को पीछे हटाने में काफी मदद मिली। दुश्मनों ने वापिस लौटते समय पुलिस की सारी पोस्टों को आग लगा दी।

ऐसे हमले ३ सितंबर से ९ सितंबर, १८९७ ई तक जारी रहे। हर बार सारागढ़ी चौंकी उनके रास्ते में रुकावट बन जाती, क्योंकि दुश्मन के हमला करने से पहले ही सारागढ़ी चौंकी पर बैठा स. गुरमुख सिंघ शीशे तथा झंडे की सहायता से गुलिस्तान तथा लॉक हार्ट के कमांडरों तक संदेश भेज देता था। इस तरह सारागढ़ी के बहादुर तथा जागरूक सैनिकों के कारण दुश्मन किसी भी पोस्ट पर सफलता न हासिल कर सके बल्कि उनको भारी नुकसान उठाकर पीछे हटना पड़ गया।

इन असफलताओं से तंग आकर कबीले वालों ने सारागढ़ी को तबाह करना अपना मुख्य निशाना बनाया क्योंकि यही चौंकी उनके रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट बनी हुई थी।

१२ सितंबर, १८९७ ई को सुबह के ९ बजे के लगभग १०,००० कबीले के लोगों ने इकट्ठा होकर सारागढ़ी पोस्ट पर हमला कर दिया। स. गुरमुख सिंघ शीशा झंडी वाले सिपाही ने कर्नल हार्टन को इस हमले की संकेत द्वारा खबर दी। लेफ़्टिनेंट कर्नल हार्टन जो किला लॉक हार्ट में कमांडिंग अफसर था, वह चिंतातुर हो गया, क्योंकि सारागढ़ी चौंकी में कुछेक गिनती में ही सैनिक मौजूद थे। इनमें हवलदार स. ईशर सिंघ (चौंकी का कमांडर), नायक स. लाल सिंघ, लांस नायक स. चंदा सिंघ तथा १८ अन्य फौजी मौजूद थे। कर्नल हार्टन का सारागढ़ी की चौंकी से लगातार संपर्क था। उसमें पुन: संदेश में हुक्म दिया कि गढ़ी की रक्षा हर कीमत पर की जानी चाहिए, चाहे इसके लिए कोई भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े। उसने हुक्म दिया कि दुश्मन का बहादुरी के साथ मुकाबला करें, किंतु ख़्याल रहे कि गोली-सिक्का फ़ज़ूल बर्बाद न हो।

गढ़ी में तैनात सिक्ख सैनिकों ने अरदासा सोधकर कबीले वालों के इस हमले का डटकर मुकाबला करने का फैसला कर लिया। हवलदार स. ईशर सिंघ ने जवानों को सही पुजीशिनों पर लगाकर गोली चलाने का हुक्म दे दिया। यह

गढ़ी एक वीरान जगह पर स्थित थी, इसलिए इस चौंकी के अंदर तैनात जवानों को कोई बाहरी सहायता नहीं भेजी जा सकती थी। हालात अति गंभीर बन गये थे। सारागढ़ी के सिक्ख सैनिक चमकौर की गढ़ी वाली ऐतिहासिक घटना को याद करके पूरी चढ़दी कला में थे। लगभग आधे घंटे बाद नायक लाल सिंघ, स. भगवान सिंघ व स. जीवा सिंघ सिपाही जोश में आकर पोस्ट से बाहर निकलकर दुश्मनों पर फायर करने लगे। उन्होंने बहुत सारे दुश्मनों का सफाया कर दिया। कुछ देर की फायरिंग के बाद गोली लगने से स. भगवान सिंघ वहीं शहीद हो गये। अन्य दो सैनिक भी इस गोलाबारी में गंभीर ज़ख्मी हो गये थे। वे किसी तरह अपने साथी स. भगवान सिंघ का मृत शरीर उठाकर गढ़ी में आ गये। स. गुरमुख सिंघ अपने झंडे तथा सूरज की रोशनी के संचार उपकरण से गढ़ी के अंदर तथा बाहर घटित होने वाली हर घटना की सूचना लगातार कर्नल हार्टन तक पहुंचा रहा था। बहुत सारे दुश्मन मारे गये तथा अंदर बहादुर सिंघों की संख्या कम होती गयी। फिर भी बहादुर सिंघों ने दुश्मन को पोस्ट के पास न आने दिया। स. गुरमुख सिंघ लगातार प्रत्येक बहादुर की शहीदी की खबर कर्नल हार्टन तक पहुंचाता रहा।

सिंघों की बहादुरी, दृढ़ता तथा चढ़दी कला को स. गुरमुख सिंघ शीशा झंडी वाले द्वारा भेजे इस संदेश से सहज ही महसूस किया जा सकता है, जिसमें उसने कर्नल हार्टन को बताया कि उनके आधे सिपाही शहीद हो चुके हैं, किंतु अब बाकी बचे सारे सिपाहियों के पास दो-दो बंदूकें हैं।

इस गढ़ी की एक तरफ सीधी ढलान थी तथा इधर से हमला करना बहुत कठिन था, किंतु अन्य तीनों तरफ से थोड़ी ढलानें होने के कारण कबीले वाले बार-बार इधर से हमला कर रहे थे। गढ़ी में घिरे हुए सिंघ जैकारे बुला-बुलाकर अपने अस्तित्व एवं दृढ़ता का सबूत दे रहे थे। लड़ाई शुरू हुए ६ घंटे हो चले थे किंतु अभी तक १०,००० कबीले वाले इस चौंकी को जीत सकने में कामयाब नहीं हुए थे। इन ६ घंटों में ६०० कबीले वाले मारे जा चुके थे जबकि मुकाबला कर रहे २१ सिक्ख सैनिकों में से १२ शहीद हो चुके थे। अब केवल नायक ईशर सिंघ अपने बचे हुए सिक्ख शूरवीरों से दुश्मनों का मुकाबला कर रहा था। 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सिक्खिज़्म' भाग चौथा, पन्ना ५९ पर लिखा है :

Havaldar (Nayak) Ishar Singh and his men, undaunted by the hopeless situation they were in, fought with grim determination.

२ बजे के लगभग स. गुरमुख सिंघ ने लॉक हार्ट के किले में तैनात कर्नल हार्टन को सूचना दी कि गढ़ी में से गोला-बारूद खत्म हो रहा है, अब क्या आदेश है? कर्नल साहिब का हुक्म था, डटे रहो तथा जिस तरह संभव हो दुश्मन का मुकाबला करते रहो।

किले तक पहुंचने के लिए कबायलियों ने लड़ाई की एक सूझभरी चाल चली। उन्होंने एक चारपाई लेकर उस पर मिट्टी तथा पत्थरों की ३ फुट मोटी तह बनाकर उसकी आड़ में किले की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया तथा सुरक्षित जगह पर पहुंच गये जहां गोली की मार नहीं थी हो सकती। गढ़ी के पास पहुंचकर उन्होंने

एक दीवार में सेंध लगाई तथा इस तरफ सूखी लकड़ियां इकट्ठा करके आग लगा दी। स. गुरमुख सिंघ ने फिर पीछे सूचना दी कि अब दारु-सिक्का बिलकुल ही खत्म हो गया है तथा दुश्मन किले पर मुर्दों की लाशें रखकर ऊपर चढ़ रहा है। हमारे दो सिपाही किले पर चढ़ रहे दुश्मनों से लड़ रहे हैं तथा अन्य किले में दाख़िल हो चुके दुश्मनों से लड़ रहे हैं।

सारागढ़ी के अंदर से फायरिंग का जवाब न मिलने के कारण कबीले वाले आगे बढ़ते आ रहे थे। एक बार फिर स. गुरमुख सिंघ ने लॉक हार्टन के किले पर सूचना भेजी कि हम सभी ओर से घिर चुके हैं किंतु चिंता मत करना, हम मर जायेंगे किंतु दुश्मन के आगे हथियार नहीं फेंकेंगे। असला खत्म होने के पश्चात् जवान तलवारें तथा संगीनां लेकर मैदान में आ गये। गढ़ी का कमांडर हवलदार स. ईशर सिंघ भी आखिरी गोली तक पठानों से जूझता हुआ शहीद हो चुका था।

इस घमासान तथा असमान लड़ाई में बचे हुए सिंघों में से केवल सूचना भेजने वाला स. गुरमुख सिंघ ही बचा था। अब उसने कर्नल हार्टन से आज्ञा मांगी कि वह संचार उपकरणों को बंद करके अपनी रायफल उठाकर दुश्मनों से भिड़े। आज्ञा मिलते ही उसने संचार-साधनों के लिये प्रयोग किये जा रहे उपकरण कपड़े के थैले में बंद किए तथा 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तहि' का नारा बुलंद करता हुआ अपनी रायफल उठाकर दुश्मनों पर टूट पड़ा। कबीले के अफगान मानते हैं कि अकेले गुरमुख सिंघ ने 'शहीद' होने से पहले हमारे २० आदमियों को ढह-ढेरी कर दिया था। अब तक कर्नल हार्टन को संदेश मिलने भी बंद हो चुके थे।

३६ सिक्ख रेजिमेंट के ये २२ के २२ सिंघ वहीं शहीद हो गये। उन्होंने फिर कभी अपनी जन्म-भूमि न देखी। सारागढ़ी के खंडहर ही उनकी यादगारें बन गये। एक मुहावरा है कि "घर की बदनामी से विदेशी कब्र ही अच्छी होती है" (**Better a foreign grave than native scorn**) यहां कितना अच्छा चरितार्थ होता है।

एक कवि ने लिखा है :

On saragarhi remparts died the
Bravest of the brave
Neath Saragarhi ruined walls
Found a fitting grave
for Saragarhi bens the fame,
they gave their lives to save.

(सारागढ़ी के किले में वे बहादुरों के बहादुर मारे गये तथा सारागढ़ी के खंडहरों में ही उनकी यादगारें बनीं तथा उन्होंने सारागढ़ी की प्रसिद्धि जानें वारकर कायम की।)

अब कबीले वालों ने अपने साथियों की लाशों को गढ़ी से बाहर निकालकर गढ़ी को आग लगा दी। एक तरह से इसने ही शहीद होने वाले सिंघों की अंतिम रस्म, अंतिम संस्कार की भूमिका निभाई। इस तरह ये जवान अपना फर्ज़ निभाते हुए बहादुरी की मिसाल कायम करके आखिर गढ़ी की राख में ही मिल गये थे। ब्रिगेडियर डी. एम. बाही ने 'टाईम्ज़ ऑफ इंडिया' के २२ सितंबर, १८९७ के अंक में लिखा था:

The smouldering ruins of Saragarhi formed a befitting funeral pyre for the

immortal heroes. . .they fought to the last man and last bullet not yielding an inch of ground to the enemy.

इन २२ सिक्खों ने शहीदियां पाकर अपना गौरव, अपनी कौम की इज्जत तथा अपनी रिवायतों को दाग न लगने दिया। इन्होंने अपने गुरु की बख़्शी हुई शक्ति का लाभान्वित प्रयोग किया तथा शहीद होकर अपने से पहले शहीद हुए सिंघों की लिस्ट में अपने नाम दर्ज करवा लिए।

अगली सवेर (१३ सितंबर, १८९७) को जब राहत दल सारागढ़ी पहुंचा तो वहीं एक दिन पहले हुई घमासान की लड़ाई तथा सिक्ख शहीदों की निशानियां अपनी दासतान बयान कर रही थीं। भारी मात्रा में जानी एवं माली नुकसान उठाकर परत रहे कबीले वालों ने कभी नहीं सोचा था कि इतनी कम संख्या वाले सिक्ख शूरवीर उनका इतना नुकसान कर देंगे।

जब सारागढ़ी की घटना तथा सिक्ख शूरवीरों की कुर्बानी की बात इंग्लैंड में रानी विकटोरिया तक पहुंची तो उस वक्त ब्रिटिश पार्लियामेंट के सेशन के दौरान दोनों सदनों के सारे सदस्यों ने खड़े होकर इन बहादुरों की अद्वितीय कुर्बानी की सराहना करते हुए कहा कि "इंग्लैंड एवं हिंदोस्तान के लोगों को ३६ सिक्ख रेजिमेंट के इन वीर सैनिकों पर बड़ा नाज़ है। जिस देश की फौज में सिक्खों जैसी बहादुर कौम हो, वह देश लड़ाई के मैदान में कभी हार नहीं सकता।"

सारागढ़ी की जंग सिक्खों द्वारा अंग्रेजी हकूमत अधीन लड़ी गयी। इस जंग में सिक्खों द्वारा दिखाई गई बहादुरी को इंग्लैंड की पार्लियामेंट में भी प्रशंसा प्राप्त हुई तथा उस वक्त के पार्लियामेंट सेशन में इस जंग में शहीद हुए सिंघों को दो मिनट के लिए खड़े होकर मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा ये शब्द कहे गये, "इंग्लैंड तथा भारत की जनता की ३६ सिक्ख रेजिमेंट पर गर्व है तथा जिस देश की फौज में सिक्खों जैसी बहादुर कौम हो, वह देश लड़ाई के मैदान में कभी हार का मुंह नहीं देख सकता।"

सारागढ़ी की जंग सामूहिक शूरवीरता का एक असाधारण कारनामा है, जिसके जैसी अन्य मिसाल दुनिया के इतिहास में कहीं नहीं मिलती।

यह कोई पहली बार नहीं हुआ था कि अंग्रेजों ने सिक्खों की बहादुरी की प्रशंसा करके सिक्खों को सत्कार भेंट किया था, बल्कि इससे पहले भी जब सिक्ख अंग्रेजों के विरुद्ध ही लड़े थे तो भी एक अंग्रेज अफसर कनिंघम ने सिक्खों की शूरवीरता की उस वक्त प्रशंसा की थी।

इन सिक्ख सैनिकों की बहादुरी तथा फर्ज़ के लिए कुर्बान हो जाने की भावना को देखते हुए इंग्लैंड की सरकार ने सभी बहादुरों को मरणोपरांत 'इंडियन आर्डर ऑफ मैरिट' से सम्मानित किया तथा उनके वारिसों को ५०० रुपये नकद तथा २-२ मुरब्बे जमीन (५०-५० एकड़) दी गई ताकि वे सम्मानजनक ज़िंदगी जी सकें। यह मैडल 'विकटोरिया करास' तथा आज़ाद भारत में दिये जाते 'परमवीर चक्र' के बराबर है। ३६वीं सिक्ख बटालियन को भी जंगी सम्मान से सम्मानित किया गया। सारागढ़ी में शहीद होने वाले शूरवीरों के नाम, जिनको १२ सितंबर, १८९७ ई को उपरोक्त सम्मान दिया गया, इस प्रकार हैं :

बैलेट नं:	रैंक	नाम	पता
१६५	हवलदार	ईशर सिंघ	गांव व डाक: झोरड़ां, वाया बसीआं तह. जगराउं, ज़िला लुधियाना
३३२	नायक	लाल सिंघ	गांव धुन, तह. तरनतारन
५४६	लांस नायक	चंदा सिंघ	गांव: संधो, तह. धांदे (पटियाला)
१६३	सिपाही	राम सिंघ	गांव: सैदोपुर (अंबाला)
१८२	सिपाही	साहिब सिंघ	
१९२	सिपाही	उत्तम सिंघ	गांव: चड़िक तह. जिला मोगा
२८७	सिपाही	राम सिंघ	----------------------
३५९	सिपाही	हीरा सिंघ	गांव: दूलो रूला (लाहौर)
६८७	सिपाही	दया सिंघ	गांव: खड़क सिंघ वाला (पटियाला)
७६०	सिपाही	जीवन सिंघ	गांव संगतपुर तह. नकोदर (जलंधर)
७९१	सिपाही	भोला सिंघ	---------------------
३१४	सिपाही	गुरमुख सिंघ	गांव: कमाना, तह. गढ़शंकर (होशियारपुर)
८३४	सिपाही	नारायण सिंघग	गांव: थुलीवाल, तह. बस्सी (पटियाला)
८७१	सिपाही	जीवन सिंघ	गांव: थहवाल, तह. बस्सी (पटियाला)
१२२१	सिपाही	नंद सिंघ	गांव: अटवाल (होशियारपुर)
१२५७	सिपाही	भगवान सिंघ	गांव: लोहगढ़, तह. अमरगढ़ (पटियाला)
१२६५	सिपाही	भगवान सिंघ	गांव: मंडियाला, तह. व ज़िला लुधियाना
१३२७	सिपाही	सुंदर सिंघ	----------------------
१५५६	सिपाही	बूटा सिंघ	गांव: शेरपुर, तह. फिलोर (जलंधर)
१६५१	सिपाही	जीवा सिंघ	---------------------
१७३३	सिपाही	गुरमुख सिंघ	गांव: दमोंदा (जलंधर)
	सवीपर	दाउ सिंघ	गांव: दमोंदा (जलंधर)

सिक्ख फौजियों की इस बहादुरी को दृष्टिमान करने के लिए इलाहाबाद के अखबार 'पाइनीयर' ने सबसे पहले यह आवाज़ उठाई कि इन सिक्ख शूरवीरों के गौरव में कोई बढ़िया यादगार कायम की जाये। भारत तथा इंग्लैंड के लोगों ने इस कार्य के लिए दिल खोलकर पैसा दिया जिसके परिणामस्वरूप सारागढ़ी (वज़ीरस्तान), जहां ये बहादुर शहीद हुए, में एक बुर्ज, फोर्ट लॉक हॉर्ट में एक मीनार तथा श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब के पास एक गुरुद्वारा साहिब तथा फिरोज़पुर रेजिमेंट, जिससे सबसे ज्यादा गिनती में शहीद सम्बंधित थे, में एक गुरुद्वारा साहिब स्थापित किया गया। श्री अमृतसर वाला गुरुद्वारा साहिब 'गुरुद्वारा सारागढ़ी साहिब' नाम से जाना जाता है जो कि चौंक धरम सिंघ मार्किट के पास है, जिसमें लगे मारबल की शिल पर उन शूरवीरों के नाम दर्ज हैं जो १२ सितंबर, १८९७ ई को सारागढ़ी में जूझते हुए शहीद हो गये थे।

फिरोज़पुर वाली यादगार उस समय फौज

द्वारा बहादुर सिपाहियों को श्रद्धांजलि देने के लिए २७,११८ रुपये खर्च कर बनायी गई। इसके लिए इंग्लैंड की मलिका ने भी फंड प्रदान किया था। इस यादगार का उदघाटन पंजाब के लेफ़्टिनेंट गवर्नर सर चार्लस मोंटगुंमरी ने १८ जनवरी, १९०४ ई को किया था। उसी दिन सारागढ़ी में निर्माण किए गये बुर्ज को भी लोगों के लिए खोल दिया गया था।

हर वर्ष १२ सितंबर को फौज द्वारा सारागढ़ी में शहीद हुए फौजियों को श्रद्धांजलि देने के लिए सारागढ़ी दिवस मनाया जाता है।

इन सिंघों की शहीदी ने सारे यूरोप में तहलका मचा दिया। इनकी कुर्बानी की कहानियां फ्रांस, इटली तथा जापान आदि देशों के स्कूली बच्चों तक पढ़ाई जाने लगीं। सिक्ख फौज की यह इच्छा होने के बावजूद कि उनकी बहादुरी की दासतान के बारे में सारे भारत के समूह शैक्षणिक अदारों के बच्चों को अवगत करवाया जाये, अफसोस है कि अभी तक हमारे स्कूलों तथा कॉलेजों की पुस्तकों में सारागढ़ी के इतिहास का कोई ज्यादा ज़िक्र नहीं मिलता।

जिस देश को आज़ाद करवाने में तथा देश की आज़ादी को बहाल रखने में सिक्खों ने इतनी बेमिसाल कुर्बानियों दीं, उसी देश के लिए उनकी कुर्बानियां द्वारा प्राप्त की जीत का सिहरा धोखे से दूसरे के सिर पर सजाने की साजिशें बुनी जाती हैं। अभी गत दिनों यह साबित हो चुका है कि १९९९ ई में हुई कारगिल की जंग के समय भी ७० इन्फैंट्री ब्रिगेड के कमांडर स. दविंदर सिंघ द्वारा दिखाई गयी बहादुरी ने सिक्खों की इस शानदार रिवायत को कायम रखा तथा इस जंग के दौरान सबसे ज्यादा जोख़िम भरा इलाका दुश्मन से इसी ब्रिगेड ने ही खाली करवाया। इसी ने ही कुल ८ जंगी कैदियों में से ६ कैदी तथा दुश्मनों से सबसे ज्यादा हथियार भी इसी ब्रिगेड ने काबू किए तथा सबसे ज्यादा शहादतें भी इसी ब्रिगेड ने ही दीं। इस जंग में इस ब्रिगेड को एक परमवीर चक्र, दो महावीर चक्र, ३४ वीर चक्र से सम्मानित किया गया, किंतु ब्रिगेडियर स. दविंदर सिंघ को सिर्फ गैर-बहादुरी पुरस्कार ही दिया गया। बेशक ब्रिगेडियर दविंदर सिंघ को अपनी बहादुरी को साबित करने में ग्यारह वर्ष लग गये तथा वे अपनी बहादुरी को अपने कार्य-काल के दौरान साबित नहीं कर सके। आखिर अब ग्यारह वर्ष बाद उन्होंने अपने साथ हुई बेइंसाफी के प्रति कानूनी लड़ाई जीत ली तथा आर्मड फोर्सिज़ ट्रिब्यूनल की विशेष अदालत ने उनकी अपील एवं दलील को सही ठहराते हुए आर्मी हैडक्वाटर को आदेश दिया है कि वह कारगिल की लड़ाई से सम्बंधित अपने रिकार्डों में संशोधन करे। देखने वाली बात यह है कि ब्रिगेडियर स. दविंदर सिंघ जैसे और कितने खुशकिस्मत अफसर है, जिनको इंसाफ मिला होगा या मिलेगा।

अभी भी वक्त है कि हम अपने इस गौरवशाली इतिहास से न केवल अपनी नौजवान पीढ़ी को परिचित करवाकर, अपनी शानदार प्राप्तियों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हुए उनको अपनी शानदार विरासत के साथ जोडें और आज भी आज़ाद भारत में इतनी कुर्बानियां देने तथा असाधारण बहादुरी दिखाने वाले सिक्खों के साथ होती बेइंसाफी को दूर करवाने के लिए एकजुट होकर उनको इंसाफ दिलाकर उनका बनता मान-सत्कार बहाल करवायें। वैसे भी देश की भलाई के लिए यह जरूरी है कि फौज में सिक्खों के साथ हो रही ऐसी बेइंसाफी को खत्म किया जाये, यही शहीदों को सच्ची एवं सुच्ची श्रद्धांजलि होगी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

*-स. रूप सिंघ**

समाज से सम्बंधित हर क्षेत्र में आई गिरावट को देखकर गुरु बाबा नानक देव जी ने 'नानक निर्मल पंथ' की आधारशिला रखी। 'नानक निर्मल पंथ' में हर तरफ समानता, सांझीवालता, सत्य, संतोष, संयम, सहज आदि गुणों की सुगंध फैलने लगी। समाज के हर क्षेत्र से संबंधित हर मानव इस मार्ग का सदस्य बनकर स्वाभिमान एवं सत्कार अनुभव करता। धर्म प्रचार-प्रसार के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने धर्मसालाओं (धर्मशाला) की स्थापना की। श्री गुरु अरजन देव जी के समय तक सिक्खी-प्रचार-केंद्रों को 'धरमसाल' ही कहा जाता था। आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ तैयार होने के बाद धरमसालाओं में इसका प्रकाश (स्थापन) होने से इनको 'गुरुद्वारे' की संज्ञा मिली, जिसका शाब्दिक अर्थ है-- गुरु का घर, गुरु के द्वारा, गुरु की मार्फत आदि।

'गुरुद्वारा' शब्द शाब्दिक अर्थों तक ही सीमित नहीं, सिक्ख धर्म में यह संकल्प भी है और सिद्धांत भी। गुरुद्वारा अपने आप में एक सम्पूर्ण संस्था है, जिसका निश्चित विधि-विधान, कार्य-क्षेत्र एवं मर्यादा है। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने गुरुद्वारे की परिभाषा तथा स्वरूप के बारे में लिखा है-- "गुरुद्वारा विद्यार्थियों के लिए स्कूल, आत्म-जिज्ञासुओं के लिए ज्ञान-उपदेशक, रोगियों के लिए शफाखाना, भूखों के लिए अन्नपूर्णा, स्त्री जाति की इज्जत रखने के लिए लौहमयी दुर्ग तथा मुसाफिरों के लिए विश्राम-स्थान है।"

जिस संस्था के बारे में हम विचार कर रहे हैं वो इन गुरुद्वारों का प्रबंध चलाने वाली प्रमुख शिरोमणि संस्था है-- 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' इसके नाम से ही इसका कार्य-क्षेत्र स्पष्ट है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी कैसे अस्तित्व में आई? इसका निकास-विकास कैसे हुआ और कैसे यह शिरोमणि सिक्ख संस्था के रूप में प्रवान चढ़ी? इसने क्या प्राप्तियां कीं? इन प्रश्नों को हमने संक्षेप में विचारना है।

'नानक निर्मल पंथ' का मूल आदेश संसार के हर मानव को केवल एक अकाल पुरख, जो सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापक है, के साथ जोड़ना और मानवता को हर तरह की गुलामी से आज़ाद करके 'बेगमपुरा' का निवासी बनाना है। गुरु साहिबान ने इस आदर्श की स्थापित के लिए 'गुरु-ग्रंथ' व 'गुरु-पंथ' की सृजना एवं स्थापना की। गुरु साहिबान का उपदेश बड़ा सरल तथा स्पष्ट था कि "किरत करो, नाम जपो, वंड छको।"

गुरु साहिबान की शिक्षा ग्रहण करने वाला सिक्ख 'पूजा अकाल की, परचा शबद का, दीदार खालसे का' का धारक हो गया। इन उसूलों को मन-वचन-कर्म से धारण करके सिक्ख ब्रह्मंडी शहरी कहलवाए। मगर खेद, समय बीतने के साथ आरंभिक सिक्ख संस्था 'गुरुद्वारा' के प्रबंध में भारी कमी आई । यह गिरावट प्रबंध,

**डाइरेक्टर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।*

मर्यादा, परंपरा के स्तर पर सबसे बुरी व बुरे आचरण की थी जिसे गुरमति किसी शर्त पर प्रवान नहीं करती।

सिक्ख मिसलों तथा महाराजा रणजीत सिंघ के शासन-काल के समय ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान की इमारतों के नवनिर्माण का कार्य बड़े स्तर पर हुआ। महाराजा रणजीत सिंघ ने गुरुद्वारों, मंदिरों, मसजिदों आदि के नाम भारी मात्रा में जायदाद लगवाई। श्री हरिमंदर साहिब की इमारत पर भी सोने के पत्र चढ़ाने की सेवा पहली बार महाराजा रणजीत सिंघ के शासन-काल के दौरान हुई। बेशुमार कीमती वस्तुएं गुरु-घर को भेंट की गईं। इस समय गुरुद्वारा प्रबंध ठीक-ठाक चलता रहा, परंतु जून, १८३९ ई में महाराजा रणजीत सिंघ की मृत्यु के बाद सिक्ख राज्य की शाम होनी शुरू हो गई और आखिर, १८४९ ई में सिक्ख राज्य का सूर्य अस्त हो गया। सिक्ख राज्य का सूर्य छिपने से गुरुद्वारा प्रबंध में भी गिरावट आरंभ हो गई। अंग्रेजों ने सबसे पहले श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर का मुख्य प्रबंधक-सरबराह डिप्टी कमिश्नर, श्री अमृतसर के माध्यम से नियुक्त किया। गुरुद्वारा प्रबंध का इस्तेमाल पंजाब में ईसाई मत के पैर जमाने के किया की जाने लगा। धीरे-धीरे श्रद्धालु सिक्ख घटिया गुरुद्वारा प्रबंध के कारण गुरु-घर से टूटना शुरू हो गए। अंग्रेज राज्य के समय में गुरुद्वारों के प्रबंधक उदासी महंत/सेवादार अंग्रेजों की कठपुतली बन गए। इससे गुरुद्वारा प्रबंध संगती प्रबंध की जगह व्यक्ति विशेष के प्रबंध अधीन आना शुरू हो गया। किसी महंत-पुजारी की मृत्यु के पश्चात उसका उत्तराधिकारी व्यक्ति विशेष प्रबंधक बन जाता, चाहे वो गुरमति का धारक हो या न। गुरु-घर के प्रबंध चढ़त-चढ़ावे (धन-पदार्थ आदि) तथा जायदादों के ही प्रबंधक बनकर रह गए और गुरु-घर के निवास-स्थान दुराचार के अड्डे बन गए। इस प्रकार ऐतिहासिक गुरुद्वारे मनमति (गुरमति के विपरीत) का प्रचार-केंद्र बन गए। जो कुछ सिक्खी के स्रोतों में हुआ उसके बारे में लिखते-पढ़ते भी शर्म आती है। कहने से तात्पर्य, संसार के सारे कुकर्म इन धर्म-मंदिरों में वहां के कुछ महंतों-पुजारियों तथा सरबराहों के नेतृत्व में हुए।

इन कुकर्मों को रोकने के लिए चेतन गुरसिक्खों ने शक्ति व सामर्थ्या को एकत्रित करने के लिए जत्थेबंधक रूप धारण करना शुरू किया। सिंघ सभा लहर, चीफ खालसा दीवान, स्थापित हुए, जिन्होंने दुरमति तथा अज्ञानता को दूर करने का बीड़ा उठाया। पहले सिक्ख इतने चेतन थे कि वे व्यक्तिवाद की बीमारी से बचने के लिए किसी संबंधित इमारत, गुरुद्वारे तथा संस्था आदि का नाम भी व्यक्ति विशेष के नाम पर न रखते थे।

गुरमति के अनुसार किसी भी जाति, धर्म, नसल, विभाजन आदि को मानकर किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाता, मगर महंतों-पुजारियों की गुंडागर्दी के समय गुरुद्वारों में तथाकथित नीची जाति के लोगों को जाने की मनाही थी। इस समय कड़ाह प्रसादि, अरदास तथा लंगर-पंगत की दैवी सांझ भी तितर-बितर हो गई।

१२ अक्तूबर, १९२० खालसा बरादरी का वार्षिक दीवान श्री अमृतसर में हुआ, जिसमें बहुत-से तथाकथित नीची जाति से संबंधित सिक्ख गुरु-बख़्शिश से अमृत की दात प्राप्त कर नानक निर्मल पंथ के सदस्य बने। नए सजे सिंघ श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा सृजित सर्वसांझे धर्म-स्थान श्री हरिमंदर साहिब के

दर्शन के लिए आए तो पुजारी नाक-मुंह चिढ़ाने लगे। थोड़ी नोकझोक के बाद पुजारी अरदास करने एवं हुकमनामा लेने के लिए सहमत हो गए। हुकमनामे के बोल थे :

निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥ *(पन्ना ६३८)*

जब इन सिंघों का जत्था श्री अकाल तख़्त साहिब पर अरदास-विनती के लिए हाज़िर हुआ तो श्री अकाल तख़्त साहिब के पुज़ारी हैरान हो गए। सिंघों ने निर्णय किया कि गुरु का तख़्त खाली नहीं रहना चाहिए तथा सेवा-संभाल के लिए २५ सिंघों का जत्था नियत कर दिया। दूसरी तरफ जिले के प्रशासनिक अधिकारी ने हालात को देखते हुए नौ-सदस्यीय कमेटी का गठन कर दिया। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समर्थकों ने श्री अकाल तख़्त साहिब से आदेश जारी करवाया तथा १५ नवंबर, १९२० को सिक्खों का प्रतिनिधि-इकट्ठ बुलाया गया। प्रतिनिधि-इकट्ठ में १७५ सदस्यों की कमेटी बनाई गई, जिसका नाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर रखा गया। भाई जोध सिंघ ने भूलें बख़्शवाने के लिए सिक्खों का ज़िक्र किया। प्रतिनिधि-इकट्ठ की समूची कार्यवाही देखते हुए मेरे सन्मुख आश्चर्यजनक सच सामने आए हैं कि सिक्खों में उस समय कितनी पंथप्रस्ती, गुरु-समर्पण, चेतनता तथा ज्ञान-प्राप्ति की चाह थी। प्रतिनिधि-इकट्ठ के संशोधन के लिए गुरमति मर्यादा के अनुसार पांच प्यारों का चयन किया गया। उनमें से तीन प्यारे शैक्षणिक योग्यता के रूप में उस समय एम. ए. थे-- संत भाई तेजा सिंघ एम. ए. (मसतूआणा), भाई जोध सिंघ एम. ए., बावा हरिकिशन सिंघ एम. ए. के अलावा दो अन्य सदस्य जत्थेदार भाई तेजा सिंघ (सेंट्रल खालसा दीवान) तथा स. बलवंत सिंघ रईस। इस कमेटी की पहली मीटिंग १२ दिसंबर, १९२० को श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुई। सबसे पहले पांच प्यारे चुने गए, जिन्होंने सभी सदस्यों की सुधाई की तथा पदाधिकारी का चयन किया। पहली एकत्रिता के समय में ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का विधान बनाने के लिए एक सब-कमेटी बनाई गई। ३० अप्रैल, १९२१ को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की रजिस्ट्रेशन करवा ली गई।

चुनी हुई कमेटी द्वारा श्री दरबार साहिब, तरनतारन का प्रबंध लेने के लिए महंतों के साथ बातचीत चल रही थी तो पुजारियों ने गोली चला दी जिसमें भाई हज़ारा सिंघ जी शहीद हो गए, जो 'गुरुद्वारा प्रबंधक सुधार लहर' के प्रथम शहीद कहलवाए।

२० फरवरी, १९२१ ई. को ननकाणा साहिब का साका घटित हो गया, जिसमें अनेकों सिंघ महंत नारायण दास के गुंडों की गोलियों, गंडासियों, बरछियों तथा लाठियों का शिकार हुए। कुछ सिंघों को महंत के आदमियों ने जंड के वृक्ष के साथ बांधकर जिंदा जला दिया। इस अति दुखदायक एवं हृदयविदारक घटना के पश्चात २१ फरवरी, १९२१ ई. को गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी, ननकाणा साहिब का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन आया।

८ अगस्त, १९२१ ई. को गुरु का बाग, गांव घुक्केवाली, श्री अमृतसर का मामला मोर्चे का रूप धारण कर गया। अंग्रेज हाकिम असल में पूरी तरह से महंतों तथा पुजारियों के पक्ष में थे। गुरसिक्खों ने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समय, अंग्रेज साम्राज्य तथा भ्रष्ट महंतों, पुजारियों

के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ते हुए अनेक यातनायें झेलकर एवं कुर्बानियां देकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना की। चाबियों का मोर्चा, गुरुद्वारा भाई फेरू का मोर्चा, जैतो का मोर्चा, कृपाण का मोर्चा आदि अंग्रेज सरकार के जुल्मों की कहानी रूपमान करते हैं। आखिर, अंग्रेज साम्राज्य को संगठित सिक्ख-शक्ति के आगे घुटने टेकने ही पड़े। १९२५ ई में सिक्ख गुरुद्वारा कानून बन जाने से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर विश्व की प्रथम लोकतांत्रिक ढंग से धार्मिक स्थानों का प्रबंध संभालने वाली संस्था अस्तित्व में आई।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की सृजना सिक्ख शहीदों के सिरों पर हुई है। १९२० ई से १९२५ ई तक चली गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर अपनी चरम सीमा पर थी। इस समय के दौरान जो कुर्बानियां सिक्खी के परवानों ने गुरुद्वारों के प्रबंध को सुधारने हेतु कीं; मानसिक, शारीरिक यातनायें झेलीं, उनको बयान करना मुश्किल है। एक ईसाई पादरी के आंखों देखे हाल से बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है, जो उसने गुरु का बाग के मोर्चे के समय सिक्खों पर होते जब्र-जुल्म को देखकर लिखे और कहा-- "मैंने सैकड़ों 'ईसा' सूली पर चढ़ते देखे।"

अकाल के पुजारी गुरसिक्ख 'अकाली' कहलाए, जिन्होंने गुरुधामों, गुरुद्वारों की अज़मत के लिए अंग्रेज सरकार के विरुद्ध भूखे-प्यासे, नग्न-शरीर लंबा संघर्ष किया तथा सफलता की सर-बुलंदियों को छुआ। ये गुरु के लाल तन, मन, वचन, कर्म से अकाल के पुजारी थे तथा नि:स्वार्थ, निष्काम सेवा द्वारा सिक्खी के स्रोत-गुरुद्वारों में गुरसिक्खी सिद्धांत और मर्यादा बहाल कराना इनका आदर्श था। १४ दिसंबर, १९२० ई को गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर को सफल करने के लिए जांबाजों की जत्थेबंदी 'शिरोमणि अकाली दल' अस्तित्व में आई, जिसको शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की खड़गभुज कहा जाता था। अकाली लहर ने ही गुरुद्वारा चुनाव में पहली बार सिक्ख महिलायों को वोट का अधिकार दिलाया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर को सिक्खों की शिरोमणि संस्था होने का गौरव हासिल है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर मात्र ऐतिहासिक गुरुद्वारों का प्रबंध ही नहीं करती बल्कि इसका कार्य-क्षेत्र भी बहुत विशाल है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने बहुत सारे ऐतिहासिक कार्य तथा फैसले किए हैं, जिनके बारे में हम संक्षेप में विचार करेंगे।

गुरुद्वारा एक्ट बनने से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने विधिवत् कार्य करना शुरू कर दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का चुनाव पांच वर्ष बाद बालिग सिक्ख वोटरों द्वारा किया जाता है और चुनाव भारत सरकार करवाती है। मौजूदा हाऊस में कुल १९० सदस्य हैं, जिनमें से १२० सदस्य चुनाव-क्षेत्रों से चुनकर आते हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों का चुनाव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा चंडीगढ़ से होते हैं और १५ सदस्य देश भर में से नामज़द किए जाते हैं। ३० सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। आम चुनाव के बाद प्रत्येक वर्ष अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष पदाधिकारी तथा कार्यकारिणी, अन्य सदस्यों का चुनाव होता है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कार्य भाग को सुचारू ढंग से चलाने के लिए उसमें सेक्शन ८५, सेक्शन ८७, धर्म प्रचार कमेटी,

सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, एजूकेशन कमेटी, ट्रस्ट ब्रांच आदि अलग-अलग विभाग हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन सेक्शन ८५ में ५४ बड़े ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान आते हैं तथा सेक्शन ८७ के अधीन छोटे ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान शामिल हैं। इनमें चुनी हुई कमेटियां, नामज़द कमेटियां तथा स्थानीय-कमेटियां शामिल हैं। धर्म प्रचार कमेटी के अधीन अलग-अलग राज्यों में ११ सिक्ख मिशन स्थापित हैं तथा १० मिशनरी कॉलेज चलाये जा रहे हैं। ट्रस्ट विभाग द्वारा दो मेडिकल कॉलेज, दो इंजीनियरिंग कॉलेज, अनेकों डिग्री कॉलेज एवं स्कूल चलाये जा रहे हैं।

लोक-कल्याणकारी कार्यों के रूप में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी आल इंडिया पिंगलवाड़ा चैरीटेबल सोसायटी, श्री अमृतसर (भक्त पूरन सिंघ), यतीमखाना, वृद्धाश्रम आदि को वार्षिक सहायता देती है। इसके अलावा बाढ़-पीड़ितों, भूकंप-पीड़ितों, जोधपुर के कैदियों, धर्मी फौजियों की मदद भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ही करती है।

जातीय भेदभाव को मिटाने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब से हुकमनामा जारी हुआ कि कोई सिक्ख किसी के साथ जाति भेदभाव नहीं करेगा और न ही किसी की जाति-बिरादरी आदि पूछेगा। महंतों एवं पुजारियों के प्रबंध के कारण प्रत्येक गुरुद्वारे की अपनी मर्यादा थी, जिसको एकसुर तथा एकसार करने के लिए 'सिक्ख रहित मर्यादा' निश्चित की गई। इसको समूचे 'गुरु-पंथ' की प्रवानगी हासिल है।

१७ जून, १९२३ ई को श्री अमृतसर सरोवर की कार-सेवा करवाई गई जो ऐतिहासिक कार्य था। गुरुद्वारा प्रबंध की आमदन-खर्च के हिसाब-किताब को पारदर्शी बनाने के लिए १९२७ ई से मासिक पत्र 'गुरुद्वारा गज़ट' प्रकाशित करना शुरू किया गया, जो निरंतर जारी है।

सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए श्री ननकाणा साहिब के शहीदों की याद में शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज स्थापित किया गया। अब मिशनरी कॉलेजों की संख्या १० है, जो अलग-अलग राज्यों में चलाये जा रहे हैं। सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड की स्थापना की गई ताकि प्रमाणित सिक्ख इतिहास की निशानदेही की जा सके।

पंजाबी सूबे की स्थाप्ति के लिए प्रस्ताव पारित किया गया तथा मोर्चा लगाया गया। आज़ादी लहर को पूर्ण सहयोग तथा समर्थन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर द्वारा दिया गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर का कानूनी अधिकार-क्षेत्र गुरुद्वारा प्रबंध सम्बंधी चाहे पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा चंडीगढ़ तक सीमित है, किंतु विश्वभर में बसे सिक्ख इसको अपनी प्रतिनिधि संस्था मानते हैं। विश्वभर से सिक्खों से सम्बंधित मामले शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास ही आते हैं, मामला चाहे दसतार का हो या ककारों का या किसी भी तरह की सिक्खों के विरुद्ध धक्केशाही का।

गुरुद्वारों के नव-निर्माण, सरायों के पूर्ण प्रबंध, सिक्ख विरसे तथा विरासत को संभालने व सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आधुनिक साधनों का प्रयोग किया जा रहा है; रेडियो, टी.वी., इंटरनेट माध्यम को प्रयोग में लाया जा रहा है।

गुरबाणी, सिक्ख रहित मर्यादा तथा सिक्ख साहित्य के प्रचार-प्रसार, गुरमति साहित्य के

प्रकाशन के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा अपने विशेष छापेखाने लगाए गए हैं, जिनमें अन्य धार्मिक साहित्य के अलावा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रकाशन-सेवा अदब-सत्कार तथा मर्यादा सहित की जाती है।

सिक्खों की इस शिरोमणि संस्था के प्रथम अध्यक्ष होने का गौरव स. सुंदर सिंघ मजीठिया को प्राप्त हुआ। पंथ के बेताज़ बादशाह बाबा खड़क सिंघ, पंथ-रतन मास्टर तारा सिंघ, पंथ-रतन जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा, लौहपुरुष जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी, बीबी जगीर कौर, प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर आदि हस्तियों को इस संस्था के अध्यक्ष के रूप में सेवा निभाने का अवसर प्राप्त हुआ। गत: पांच वर्षों से जत्थेदार अवतार सिंघ (मक्कड़) निरंतर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष पद पर सेवा निभा रहे हैं।

१९२० ई से लेकर अब तक शिरोमणि संस्था : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर की अध्यक्षता पदवी पर सुशोभित हो चुकी प्रमुख सिक्ख शख़्सियतों के संक्षिप्त जीवन तथा उनकी प्राप्तियों के बारे में गुरमति ज्ञान के आगामी अंकों में श्रृंखलाबद्ध विवरण दिया जाएगा।

सशक्त मुझे बना दो

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

अपने दोषों से लड़ने को, सशक्त मुझे बना दो!
और मेरे पत्थर-दिल में, भक्ति की ज्योति जला दो!
बहुत कोशिशें करता मैं, पर अवगुण साथ न छोड़ें।
रग-रग में हैं बसे हुए, मुझसे नाता न तोड़ें।
इनको कर दो निर्बल, मेरी इच्छा-शक्ति बढ़ा दो!
अपने दोषों से लड़ने को, सशक्त मुझे बना दो!
जब भी तुमसे मिलना चाहूं, ये आड़े आ जाते।
तरह-तरह के क्षुद्र लोभ से, मन मेरा भटकाते।
मेरा मन रम जाये तुम में, ऐसा रंग चढ़ा दो!
अपने दोषों से लड़ने को, सशक्त मुझे बना दो!
मैं गुलाम इंद्रिय-समूह का, तुम हो इसके स्वामी।
इसके बंधन काट मुझे, कर लो अपना अनुगामी।
कभी नहीं भूलूं फिर तुमको, ऐसा पाठ पढ़ा दो!
अपने दोषों से लड़ने को, सशक्त मुझे बना दो!

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो : ०९४११६०७६७२*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सम्बंधी स्रोत-सूचना

*-डॉ. गुरमेल सिंघ**

(अगस्त अंक का शेष)

* निहाल सिंघ (सूरी, अकाली), श्री गुरमति भउ प्रकाशनी टीका श्री गुरु ग्रंथ साहिब, कलगीधर प्रेस, रावलपिंडी, १९३० (अधूरा)
* परमिंदर कौर करांती, गुरबाणी कथन कोश, लोकगीत प्रकाशन, २०००
* परमिंदरजीत सिंघ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विचले प्रशन-उत्तरां दा कोश, प्रो. साहिब सिंघ गुरमति ट्रस्ट, पटियाला, २००३
* पिआरा सिंघ पदम (प्रो.), गुरबाणी कोश, सरदार साहित भवन, पटियाला, जनवरी, १९६०
* पिआरा सिंघ पदम (प्रो.), गुरु ग्रंथ विचार कोश, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, सितंबर-१९६९
* पिआरा सिंघ पदम (प्रो.), श्री गुरु ग्रंथ संकेत कोश, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९७७
* पिआरा सिंघ पदम (प्रो.), श्री गुरु ग्रंथ महिमा कोश, नानक प्रकाश पत्रिका, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, जिल्द-१६, अंक-१, जनवरी-जून, १९८३
* बदन सिंघ (ज्ञानी), टीका श्री गुरु ग्रंथ साहिब (फरीदकोटी टीका), (चार भाग), भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९७०
* बिशन सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब सटीक (आठ भाग), भाई जवाहर सिंघ किरपाल सिंघ, श्री अमृतसर, १९२८-४८
* भगवान सिंघ (ज्ञानी), आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब पदारथ कोश, मीआं चिरागदीन, लाहौर, १९०१
* महिताब सिंघ (मास्टर), श्री गुरु ग्रंथ साहिब विच आए इतिहासक/मिथिहासक नावां-थावां दा कोश, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, १९९५ (पांचवी बार)
* मनी सिंघ (ज्ञानी), श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिधांतक टीका (आठ भाग), गली शहीद बुंगा, कौलसर, श्री अमृतसर, १९८०
* मोहन सिंघ वैद (भाई), गुरमति अखौतां, तरनतारन, १९२७
* रण सिंघ (बिदी), प्रयाय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे, श्री अमृतसर, १८७२
* रतन सिंघ (जग्गी, डॉ.), श्री गुरु ग्रंथ साहिब विशव कोश (दो भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००२
* राम सिंघ (ज्ञानी), गुरबाणी अदुत्ती कोश, भाई प्रताप सिंघ सुंदर सिंघ, श्री अमृतसर, १९२१
* लाल सिंघ संगरूर (ज्ञानी), गुरु ग्रंथ सिधांत संग्रहि, गुरमति प्रेस (बावा बुध सिंघ प्रेस), श्री अमृतसर, अप्रैल-१९५३
* वीर सिंघ (भाई), गुरबाणी संथया पोथीआं (सात भाग), संपादक डॉ. बलवीर सिंघ, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९६३ (अधूरा, सोरठि राग तक)
* वीर सिंघ (भाई), श्री गुरु ग्रंथ कोश, खालसा ट्रेक्ट सोसायटी, श्री अमृतसर, १९८३

फुटकल (बिना किसी क्रम से) :

* प्रयाय आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब (पत्थर छाप), गुरमति प्रेस, श्री अमृतसर, १९०७
* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रयाय, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, मसौदा संख्या २३७

श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२

* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रयाय, खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर, मसौदा एस. एच. आर.-१४७३
* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रयाय, पंजाब यूनीवर्सिटी, चंडीगढ़, मसौदा संख्या ३६८
* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रयाय, सेंट्रल लायब्रेरी, पटियाला, मसौदा संख्या २७१८
* श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे अरबी-फारसी प्रयाय, डॉ. चंनण सिंघ चंन, यू. के., आर. एल.-४२३
* भगत गंगा राम सिंधी, प्रयाय गुरबाणी के, डॉ. बलवीर सिंघ साहिब केंद्र, देहरादून, सं. २९५
* देवा सिंघ (निरमला, पंडित), प्रयाय भगत बाणी के ते श्री गुरु ग्रंथ साहिब के, श्री अमृतसर, १८९६
* श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रशन-उत्तर विआखिआ, डॉ. चंनण सिंघ चंन, यू. के. के निजी संग्रह में
* श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अरथ, ज्ञानी करतार सिंघ द्वारा १९३० ई में किसी पोथी से की गई नकल, डॉ. चंन के निजी संग्रह में
* गुरबाणी पाठ निरणय अर्थात् श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे कुझ पाठां दा प्रयावां सहित संग्रहि, मालवा प्रेस, मोगा, १९४९
* बूटा मल चौधरी, कोश श्री गुरु ग्रंथ साहिब-प्रचीन संप्रदायिक, यंत्रालय गुलशन, पंजाब, रावलपिंडी
* प्रताप सिंघ जोतषी (ज्ञानी), अनेक अरथी श्री गुरु ग्रंथ साहिब : एक नाम अनेक नामावली कोश, भाई लाभ सिंघ एण्ड संस, श्री अमृतसर, १९१६
* गुरमुख सिंघ निरमला, श्री गुरु ग्रंथ साहिब बालबोधवी अरथ माला, श्री अमृतसर, १९४५
* प्रताप सिंघ (ज्ञानी), आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब दा कोश, भाई बूटा सिंघ प्रताप सिंघ, श्री अमृतसर, १९५८
* गुरनाम सिंघ (डॉ.), आदि ग्रंथ : राग कोश, पवित्र प्रमाणिक प्रकाशन, पटियाला, १९८३
* बलवीर सिंघ (डॉ.), निरुकत श्री गुरु ग्रंथ साहिब (दो भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९७५

दी गई हवाला-स्रोत-सूचना के बारे में विस्तृत विवरण, भंडार-स्थान, अध्ययन, विश्लेषण तथा अन्य अनेकों पक्षों के बारे में जानने के लिए निम्नलिखित पुस्तकों/कार्यों को देखा जा सकता है :

* शमशेर सिंघ अशोक, पंजाबी हथ-लिखतां दी सूची (दो भाग), भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९६१-६३
* अमरजीत सिंघ (डॉ.) (संपा.), टीकाकारी, इतिहासकारी ते पत्तरकारी : कुझ द्रिषटीकोण (सेमीनार पेपर), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८९
* हरनाम सिंघ शान (प्रो.) गुरु ग्रंथ साहिब दी कोशकारी, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, १९९४
* तारन सिंघ (डॉ.), गुरबाणी दीआं विआखिआ प्रणालीआं, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९८०
* नानक प्रकाश पत्रिका (विशेषांक),पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, जिल्द-८, अंक-२, दिसंबर १९७६
* पंजाबी दुनीआं (पंजाबी कोशकारी विशेष अंक), भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, अंक-८,९,१०, अक्तूबर २००१
* **Gurnek Singh (Dr.), Guru Granth Sahib : Interpretation, Meaning and Nature, National Book Shop, 32-B, Chandni Chowk, Delhi-1998**
* **Rajinder Kaur (Dr.), Sikh Exegetical Writings : A study in the Various Traditions, Punjabi University, Patiala, 1998 (Ph.d., Unpublished)**

नरैना (राजस्थान) का ऐतिहासिक गुरुद्वारा

*-स. सुरजीत सिंघ**

नरैना वह ऐतिहासिक तीर्थ-स्थल है जहां राजस्थान-भ्रमण के दौरान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जयपुर होते हुए इस धरती पर मार्च, सन् १७०७ को पदार्पण कर पवित्र किया था-*"सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥"* नरैना प्रारंभ से ही दादू पंथ के संस्थापक संत दादू जी की जन्म-स्थली होने के कारण दादू पंथ की आध्यात्मिक तीर्थ-स्थली माना जाता रहा है। जयपुर से लगभग ६५ किलोमीटर एवं दूदू कसबे से १२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित पवित्र स्थान नरैना पक्के सड़क मार्ग पर होने के कारण हर समय यहां दर्शनार्थ आवागमन बना रहता है।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार दादू पंथ के संस्थापक संत दादू जी की उनके समकालीन रहे श्री गुरु हरिराय साहिब एवं श्री गुरु तेग बहादर साहिब से ज्ञान-चर्चा हुई थी। संत दादू जी त्यागी एवं आध्यात्मिक शक्ति वाले कर्मयोगी थे। संत दादू जी का परलोक गमन हो जाने के उपरांत दादू पंथ के समकालीन पीठाधीश्वर संत जैत राम जी का मिलन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ उनके नरैना पधारने पर हुआ। नरैना पहुंचने से पूर्व गुरु जी जयपुर में सतिसंग एवं ज्ञान-गोष्ठियों हेतु छः दिन रुके थे। वहां उन्होंने प्रसन्न होकर भक्त मान जी को श्रद्धास्वरूप अपनी कृपाण भेंट की थी जो आज भी दर्शनार्थ जयपुर में शोभा बढ़ा रही है।

दादू पंथ के समकालीन पीठाधीश्वर संत जैत राम जी के अनुरोध पर ज्ञान-चर्चा हेतु गुरु जी ने नरैना में तेरह दिन का ठहराव किया था। इस विश्राम अवधि के सम्बंध में इतिहासकारों का मतैक्य नहीं है। गुरु जी एवं महंत जैत राम जी के मध्य कई चरणों में निरंतर ज्ञान-चर्चाएं होती रहीं जिससे महंत जी गुरु जी की आध्यात्मिकता, विद्वता, दूरदर्शिता एवं भक्ति-शक्ति से बहुत प्रभावित हुए। महंत जी के अनुरोध पर गुरु जी ने लंगर-प्रसाद ग्रहण कर प्रसन्नता व्यक्त की।

गुरु जी एवं महंत जैत राम जी के मध्य चली लंबी ज्ञान-गोष्ठियों के परिणामस्वरूप आगे चल कर दादू-पंथियों का एक 'नागा संप्रदाय' के रूप में उद्‌गम हुआ। दादू-पंथी नागा संप्रदाय पूर्णतया केशाधारी होने के साथ-साथ शस्त्र-विद्या के विचार का भी समर्थक रहा है।

नरैना की इस पवित्र धरती पर एक विशाल ऐतिहासिक गुरुद्वारा 'चरण कंवल साहिब' सुशोभित है, जहां भव्य लंगर हाल के अतिरिक्त विश्राम एवं ठहराव हेतु विभिन्न कमरों का निर्माण-कार्य चल रहा है। गुरुद्वारे में हस्तलिखित श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश संगत के दर्शनार्थ हो रहा है। नरैना के निकट ग्राम सावंरदा में गुरु जी के आगमन की स्मृति में ऐतिहासिक गुरुद्वारे का निर्माण हो रहा है, जहां श्रद्धालु दूर-दराज के क्षेत्रों से पहुंच अपनी आस्था प्रकट करते हुए नत्मस्तक हो अपना मानव जीवन सार्थक कर रहे हैं।

**५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)-३२४००७; मो ९४१३६-५१९१७*

गुर सिखी बारीक है . . १७

-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ*

परमात्मा के प्रेम की राह कठिन है किंतु एक गुरमुख सारी कठिनाइयों को सतिगुरु की शिक्षाओं का पालन करते हुए पार करने में सफल हो जाता है और प्रेम-रस के प्याले को पीकर आनंदित हो जाता है। सतिगुरु की शिक्षाओं को जीवन-आचरण में उतारे बिना और कोई उपाय नहीं है इस कठिन मार्ग पर विजय पाने का। गुरमुख कैसे परमात्मा के प्रेम का अधिकारी बनता है, इसका सुंदर वर्णन भाई गुरदास जी करते हैं :

गुरमुखि आपु गवाइ न आपु गणाइआ।
दूजा भाउ मिटाइ इकु धिआइआ।
गुर परमेसरु जाणि सबदु कमाइआ।
साधसंगति चलि जाइ सीसु निवाइआ।
गुरमुखि कार कमाइ सुख फलु पाइआ।
पिरम पिआला पाइ अजरु जराइआ ॥

(वार २०:४)

परमात्मा का प्रेम पाने के लिए गुरमुख को अपने 'स्व' का त्याग करना पड़ता है, अपने अहम् को मिटा देना पड़ता है। मन में अहम् किसी भी चीज का हो सकता है। अपने रूप-सौंदर्य, धन-सम्पत्ति, विद्या-ज्ञान, कुल-जाति, पद-शक्ति, शारीरक-बल, चतुरता आदि किसी भी बात का गर्व हो सकता है। जब तक ऐसा गर्व मन में है जिससे 'स्व' का एहसास होता है, तब तक परमात्मा नहीं मिल सकता। इस 'स्व' से ही सारे विकार उत्पन्न होते हैं। रूप के साथ काम, शक्ति के साथ क्रोध, धन के साथ लोभ, वेश के साथ मोह का उपस्थित रहना स्वाभाविक है, क्योंकि ये अंततः टिकते हैं अहम् पर। जिसे सतिगुरु की शिक्षाओं पर विश्वास नहीं है वह रूप, धन, कुल, शक्ति आदि को अपनी उपलब्धियां मान बैठता है। अज्ञानता के आवरण के कारण उसे नहीं दिखता कि देने वाला कौन है? उसे यह ज्ञान नहीं होता कि उसे जो कुछ मिला है उसके कारण नहीं वरन् जो दे रहा है, देने वाला है, परमात्मा, उसकी कृपा के कारण। वह किसी को भी, कुछ भी दे सकता है और यह उसकी अपनी इच्छा है :

किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥
जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥

(पन्ना ९१)

एक गुरमुख भली-भांति जानता है कि संसार परमात्मा का रचाया हुआ खेल है और एक वही है जो शक्तिवान है, समर्थ है, देने वाला है। वही रिद्धियों-सिद्धियों के अपार भंडार का स्वामी है; परमात्मा ही सब कुछ करने वाला है :

रोगी का प्रभ खंडहु रोगु ॥
दुखीए का मिटावहु प्रभ सोगु ॥
निथावे कउ तुम्ह थानि बैठावहु ॥
दास अपने कउ भगती लावहु ॥२॥
निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥
मूड़ मुगधु होइ चतुर सुगिआनु ॥
सगल भइआन का भउ नसै ॥

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३

जन अपने कै हरि मनि बसै ॥३॥

(पन्ना ११४६)

मनुष्य मूलतः रोगी है, परमात्मा उसे स्वस्थ रखता है। वह स्वाभाविक रूप से दुखों से घिरा हुआ है और परमात्मा उसके दुखों का निवारण करता है। उसके जीवन में स्थिरता और शुभ विचार परमात्मा की कृपा से ही आते हैं। मनुष्य को मान और बुद्धि परमात्मा ही देने वाला है। मनुष्य भय, संशय, दुविधाओं से भरा हुआ है। इनसे मुक्ति उसे परमात्मा ही दिलाता है। यह रहस्य गुरमुख ही जानता है और जब इस पर वह पूर्णतः विश्वास करने लगता है तो उसका 'स्व' लुप्त हो जाता है। गुरमुख एक दीन-हीन की तरह व्यवहार करने लगता है। उसके पास जो कुछ भी होता है, बल, बुद्धि, धन, रूप, परिवार आदि, इनके लिए वह स्वयं को अधिकारी न मानते हुए परमात्मा की कृपा और दयालुता मानता है। इन सबके लिए वह मन में परमात्मा के प्रति आभार का भाव रखता है:

जिसु बोलत मुखु पवितु होइ ॥
जिसु सिमरत निरमल है सोइ ॥
जिसु अराधे जमु किछु न कहै ॥
जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥१॥
राम राम बोलि राम राम ॥
तिआगहु मन के सगल काम ॥

(पन्ना ११८२)

गुरसिक्ख जान लेता है कि परमात्मा ही उसका तारणहार है, इसलिए वह अपने मन के सारे विकार और 'स्व' को मिटाकर परमात्मा में ही रंग जाता है और अपने जीवन के लिए बार-बार उसका आभार मानता रहता है। परमात्मा के प्रेम में ही वह अपने जीवन की पवित्रता, निर्मलता और सफलता को पाते हुए काल के भय से मुक्त हो जाता है। गुरमुख अपने 'स्व' को इस प्रकार मिटाता है कि सारे गुण उसे बस परमात्मा में ही दिखायी देते हैं:

तेज हूं को तरु हैं कि राजसी को सरु है
कि सुद्धता को घरु हैं कि सिद्धता की सर हैं ॥
कामना की खान हैं कि साद्धना की सान हैं
बिरकतता की बान हैं कि बुद्धि को उढारु हैं ॥
सुंदर सरूप हैं कि भूपन को भूप हैं
कि रूप हूं को रूप हैं कुमति को प्रहारु हैं ॥
दीनन को दाता हैं गनीमन को गारक हैं
साधन को रच्छक हैं गुनन को पहारु हैं
॥७॥२५९॥ (अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपनी सिद्धहस्त लेखनी से परमात्मा के विस्मादकारी स्वरूप के दर्शन कराते हैं। वे परमात्मा में तेज, बल, शुचिता साधना, पवित्रता, बुद्धि सौंद्रर्य, शक्ति सामर्थ्य, उदारता, संरक्षा आदि के उत्कर्ष से भी परे के अपार साम्राज्य को देखते हैं ताकि 'स्व' का कोई रंचमात्र भी स्थान ही न रहे। सारी सांसारिक श्रेष्ठताएं जिनकी कल्पना की जा सकती है, उन सबसे भी परे की श्रेष्ठताएं वे परमात्मा में देखते हैं और परमात्मा को ही इनका उद्‌गम मानते हैं। परमात्मा के इस विस्मादकारी स्वरूप को जानना एक गुरसिक्ख के लिए आवश्यक है तभी उसके मन की सारी दुविधाएं दूर हो सकेंगी और वह एकचित्त होकर स्वयं को परमात्मा से जोड़ सकेगा। गुरसिक्ख जानता है कि परमात्मा ही सच्चा शासक है :

करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥
साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥४॥
दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥

लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥ (पन्ना ५०७)

जो परमात्मा से प्रेम की बात भी करे और अपनी सामर्थ्य पर अहंकार भी करे, अन्य उपाय भी करता फिरे, वह परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता और उसका जीवन व्यर्थ ही चला जाता है, दुविधा उसके दुखों का कारण बनती है :

दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥
बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥ (पन्ना ६३५)

परमात्मा पर अपनी आस्था को पूर्ण रूप से टिका न देने के कारण और अपने 'स्व' को मिटा न देने के कारण बुद्धि विकृत हो जाती है तथा कठिनाइयां उत्पन्न होने लगती हैं। एक गुरसिक्ख अपनी दुविधा को तो दूर करता ही है किंतु 'स्व' को मिटाकर जब सत्कर्मों में संलग्न होता है तो इस पर तनिक भर भी अभिमान नहीं करता। अपने सत्कर्मों पर अभिमान करने वाला एक कदम आगे चलने के बाद अभिमान के कारण दस कदम पीछे चला जाता है :

गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥
सबदै सादु न आइओ सचि न लगो भाउ ॥
सतिगुरु पिआरा न लगई मनहठि आवै जाइ ॥
जे इक विख अगाहा भरे तां दस विखां पिछाहा जाइ ॥ (पन्ना १२४६)

गुरसिक्खी को बारीक इसीलिए कहा गया है कि यह सिक्ख को खंडे की तीखी धार पर खड़ा कर, बाल से भी छोटी-छोटी बातों से सावधान करके ऐसी परिपक्वता प्रदान करती है कि वह कभी भी अपने मार्ग से विचलित न हो पाये, तभी वह गुरसिक्ख कहलाने का अधिकारी बनता है। इससे बड़ा तप और क्या होगा कि गुरसिक्ख सत्कर्म करे और इस बात की प्रतीति भी न रखे कि उसने कोई सत्कर्म किये हैं। यदि वह अपने कर्मों पर मान करने लगे तो गुरसिक्खी की राह में अपना स्थान गंवा बैठेगा।

गुरसिक्ख नाम-सिमरन, परमात्मा-प्रेम, सत्कर्मों पर कभी भी अभिमान नहीं करता। यह कर्म उसकी सहजता में इसलिए समा जाता है क्योंकि वह जानता है कि परमात्मा की कृपा के कारण ही वह कुछ कर पा रहा है।

परमात्मा कृपा कर रहा है तभी वह परमात्मा से जुड़ रहा है। इसमें उसका अपना कोई कौशल नहीं है :

तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥
प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥
प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥
तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥१॥
तुम लावहु तउ लागह सेव ॥
हम ते कछू न होवै देव ॥ (पन्ना १८०)

गुरमुख अंतिम तौर पर एक बात को स्वीकार कर लेता है कि उसकी सामर्थ्य में कुछ भी नहीं है। वह छोटे से छोटा काम भी अपने बल पर नहीं कर सकता। यदि वह परमात्मा के मार्ग पर चल रहा है तो परमात्मा की ही कृपा से। यदि उसे माया-मोह, विकारों से छुटकारा मिल सका है तो परमात्मा की दया के कारण। परमात्मा ने ही उसके अंदर के अहम् को मिटा दिया है और उससे भले कार्य करा रहा है। परमात्मा जैसा चाह रहा है वैसा ही वह कर रहा है। गुरसिक्ख एक दास की तरह अपने स्वामी परमात्मा पर आश्रित रहता है :

गुरुसिखी दा नावणा गुरमति लै दुरमति मलु धोवै ॥
गुरुसिखी दा पूजणा गुरसिख पूज पिरम रसु भोवै ॥

गुरुसिखी दा मंनणा गुर बचनी गलि हारु परोवै ॥
गुरुसिखी दा जीवणा जींवदिआं मरि हउमै खोवै ॥
(वार २८:९)

भाई गुरदास जी कहते हैं कि एक गुरसिक्ख का पूरा जीवन ही परमात्मा की पद्धति का अनुसरण करना है। उसका स्नान करना है सतिगुर की सुमति से अपनी दुर्बुद्धि को धो डालना। उसकी पूजा है मानव-मात्र की सेवा करना और उससे उत्पन्न रस का प्रेम से पान करना। उसका कर्त्तव्य है सतिगुरु के उपदेशों को हार की तरह गले में डाले रखना अर्थात् कभी स्वयं से अलग न होने देना गुरसिक्ख का जीवन है अपने अहम् को मारकर जीना। गुरसिक्ख परमात्मा के इतना निकट चला जाता है कि उसके और परमात्मा के बीच विकारों-अहम्-स्व का कोई स्थान ही नहीं रहता।

जब सेवक अपने स्वामी पर आश्रित होता है तो स्वामी भी उसका पूरा ध्यान रखता है, किंतु सेवक की स्वामी-भक्ति में जब कभी अहंकार आने लगे तो स्वामी पर उसका दावा स्वयं कमज़ोर हो जाता है। एक गुरसिक्ख सांसारिक सुखों की नहीं आत्मिक आनंद की इच्छा रखता है और इसके लिए स्वयं को पात्र सिद्ध करना होता है। 'स्व' को मिटा देना और अपने को गिनना छोड़ देना पात्रता की राह का पहला पड़ाव है। 'स्व' के साथ वह सारी दुविधाओं और शंकाओं का भी नाश कर देता है और स्वयं की गणना करना छोड़कर, एकाग्रचित्त होकर वह अपनी चेतना में परमात्मा को स्थान दे देता है। गुरमुख जब शबद से जुड़ता है और शबद के सार तक पहुंचता है तभी उसके 'स्व' के मिटने की परिस्थितियां बनती हैं :

कलि कीरति सबदु पछानु ॥
एहा भगति चूकै अभिमानु ॥
सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ॥
जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥२॥
तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥
करि किरपा नामु मंनि वसाए ॥
इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥
हुकमै बूझे सदा सुखु पाए ॥ (पन्ना ४२४)

जिस गुरु-शबद को गुरसिक्ख अपने जीवन का आधार बना रहा है, उस पर अपना सर्वस्व अर्पित कर देने से ही उसका 'स्व' मिट सकेगा। उस गुरु-शबद को मन और आचरण में बसाना ही सच्ची भक्ति है, जो परवान चढ़ती है।

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता करने की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है-- 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह आपके मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें।

-संपादक।

गुरबाणी चिंतनधारा : ६१

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥
साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै ॥
साधू कै संगि सो धनु पावै ॥
जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥
साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥
साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥
साधसंगि अंम्रित गुन गाइन ॥
साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥
नानक साध कै संगि सफल जनंम ॥५॥

(पन्ना २७१-७२)

इस पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने साधु की संगत की महिमा बयान की है और स्पष्ट किया है कि साधु की संगत करने वाला जीव अपने साथ अपनी कुल का भी उद्धारकर्ता बन जाता है।

गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधु की संगत की बदौलत जीव अपनी समस्त कुलों को विकारों में ग्रसित होने से बचा लेता है अर्थात् ऐसा जीव अपनी कुलों का उद्धार कर लेता है। वह साधु की संगत के माध्यम से अपने सज्जनों, मित्रों को भी विकारों से बचा लेता है। साधु-जनों की संगत की बदौलत जीव सर्वोत्तम धन (नाम-धन) हासिल कर लेता है। यह वो धन है जिससे सभी लाभान्वित होते हैं अर्थात् जिससे सबको लाभ प्राप्त होता है। प्रो. साहिब सिंघ जी ने 'वरसावै' शब्द का अर्थ ताकत के रूप में लिया है। उनके चिंतनानुसार इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार किया गया है कि साधुओं की संगत में जीव को वह धन प्राप्त हो जाता है, जिस धन के प्राप्त होने से जीव बलवान हो जाता है।

साधु-जनों की संगत में रहने से धर्मराज भी सेवा करता है अर्थात् समस्त जीवों के कर्मों का लेखाजोखा रखने वाला धर्मराज साधु-जनों की संगत में आकर नाम-सिमरन के अभ्यासी जीव से किसी तरह का लेखाजोखा नहीं मांगता। देवताओं के स्वामी भी ऐसे जीव का यशोगान करते हैं अर्थात् ऐसे जीव की महिमा लोक-परलोक में होती है। साधु की संगत के फलस्वरूप जीव के समस्त विकार और पाप कट जाते हैं, क्योंकि वहां (साधु-संगत में) परमेश्वर के अमृतमयी नाम की महिमा होती रहती है। साधु-संगत में जीव हरि-नाम का निरंतर गायन करते रहते हैं। साधु की संगत के कारण जीव की हर स्थान पर पहुंच हो जाती है अर्थात् उसके लिए कुछ भी असाध्य तथा अगम्य नहीं रह जाता है और उसकी आत्मिक अवस्था बहुत ही ऊंची हो जाती है। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट कर देते हैं कि साधु की संगत में मानव जीवन का वास्तविक मरोरथ पूर्ण हो जाता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि समस्त योनियों में से सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन ही है जिसे देवता भी पाने को लालायित रहते हैं, क्योंकि केवल यही कर्म-भूमि है बाकी सभी भोग-भूमियां हैं :

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥
(पन्ना १२)

धर्मराज की बात करें तो इस सम्बंध में चौथे पातशाह ने अन्यत्र भी इसी भाव को दृढ़ करवाया है, यथा :

धरम राइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥
जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ (पन्ना ५५५)

गुरबाणी आशयानुसार सच्चे साधुओं की सेवा को तो देवते भी तरसते हैं, क्योंकि उन्होंने माया को वश में कर रखा होता है (जिस माया के वश में सारा संसार है)। पंचम पातशाह आसा राग में भी साधु-जनों की सेवा की याचना करते हैं, यथा :

सूरबीर बचन के बली ॥
कउला बपुरी संती छली ॥
ता का संगु बाछहि सुरदेव ॥
अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥
कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥
मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥
(पन्ना ३९२)

साध कै संगि नही कछु घाल ॥
दरसनु भेटत होत निहाल ॥
साध कै संगि कलूखत हरै ॥
साध कै संगि नरक परहरै ॥
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥
साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥
जो इछै सोई फलु पावै ॥
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥
पारब्रहमु साध रिद बसै ॥
नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधु की संगत करने वाले को अत्यधिक कठिन साधना करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अगली पंक्ति में इसका कारण स्पष्ट करते हुए गुरदेव फरमान करते हैं कि साधु के दर्शन-मात्र से ही हृदय प्रसन्न हो उठता है, खुशी तथा उमंग से भर उठता है। साधु की संगत की बदौलत इंसान अपनी सारी कलुषताएं, पाप, विकारों की मैल धो लेता है; पापों एवं विकारों से रहित होकर नरक से बच जाता है अर्थात् उसका जीवन स्वर्ग जैसे आनंद से भरपूर हो जाता है।

साधु-जनों की संगत में जीव अपना लोक तथा परलोक सफल कर लेता है। साधु की संगत प्रभु से बिछुड़े हुए को पुनः प्रभु से जोड़ देती है तथा प्रभु का मिलाप अर्थात् उसका सिमरन ही जीव हेतु आनंद का कारण बन जाता है। साधु-जनों की संगत में जीव को मनोवांछित फल की प्राप्ति हो जाती है। उसकी समस्त मुरादें पूर्ण हो जाती हैं। वह पारब्रह्म परमेश्वर के हृदय में निवास करता है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि गुरमुखों की रसना से उपदेश सुनकर मनुष्य का उद्धार हो जाता है अर्थात् वह विकारों के अथाह सागर से पार उतर जाता है।

वस्तुतः साधु-जनों की संगत में ही समस्त जप-तप समाहित हैं। यही नहीं, साधु की संगत समस्त पापों का समूल नाश कर देती है। गुरबाणी में अजामल एवं गणका जैसी पाप वृत्ति वालों का ज़िक्र आया है जो कि साधु की संगत पाकर, उनके द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलकर मुक्ति पा गए। राजा जनक जैसे तत्ववेत्ता संत पुरुष की संगत जब घोर नरक में तड़पते जीवों को पल भर के लिए नसीब हुई तो उन जीवों

का भी कल्याण हो गया। साधु की संगत कदाचित निष्फल नहीं जाती। उसका शुभ एवं कल्याणकारी फल अवश्य मिलता है। साधु की संगत की महिमा अकथनीय है, क्योंकि सच्चा साधु प्रभु का ही रूप होता है :

साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥
नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ॥
(पन्ना ९२९)

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥
साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥
साधसंगि सरपर निसतरै ॥
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥
साधसंगि भए आगिआकारी ॥
साधसंगि गति भई हमारी ॥
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥
नानक साध भेटे संजोग ॥७॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह साधु की संगत में हरि-नाम को श्रवण एवं गायन करने का निर्मल उपदेश दे रहे हैं। पंचम पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि मैं साधु की संगत में रह कर परमेश्वर का (प्यारा) नाम श्रवण करूं अर्थात् प्रभु की महिमा सुनता रहूं। केवल सुनता ही न रहूं अपितु प्रभु की महिमा का गुणगान भी करूं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं निरंतर परमेश्वर की महिमा सुनूं और करूं। गुरमुखों की संगत में रहने से परमेश्वर कभी हृदय-घर से विस्मृत नहीं होता अर्थात् कभी भूलता नहीं, सदैव याद रहता है। साधु-जनों की संगत से जीव विकारों से निश्चित रूप से बच जाता है। साधु-जनों की संगत में रहने से प्रभु प्यारा लगने लगता है। साधु की संगत की बदौलत प्रभु की सर्वव्यापकता का बोध सहजता से हो जाता है अर्थात् वह कण-कण में बसता प्रतीत होने लगता है। प्रत्येक शरीर में उसका निवास है, यह निश्चय बन जाता है। साधु की संगत के फलस्वरूप जीव आज्ञाकारी हो जाता है अर्थात् उसे प्रभु की रजा में राजी रहना आ जाता है। यही नहीं, साधु की संगत जीव को उच्च आत्मिक अवस्था का मालिक बना देती है अर्थात् साधु की संगत से जीव को आत्मिक अडोलता की अवस्था प्राप्त हो जाती है, जिसे आध्यात्मिक जगत में जीते-जी मुक्तावस्था माना जाता है। साधु की संगत से समस्त विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) तथा सभी रोग-- शारीरिक, मानसिक आदि मिट जाते हैं। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि साधु की संगत बड़े भाग्य से नसीब होती है।

वस्तुत: सच्चा साधु शरणागत को कठिन साधनाओं में न डालकर उसे सहज मार्ग दर्शाता है, जिस पर चलकर साधक अपने पूर्व जन्मों के पापों से भी छुटकारा पा लेता है। पूर्ण साधु एवं प्रभु में कोई भेद नहीं होता। साधु के निर्मल उपदेशों को आत्मसात करके जो जीव उन पर मनसा-वाचा-कर्मणा अमल करता है, उसका लोक-परलोक सफल हो जाता है। पावन गुरबाणी का अन्यत्र भी संदेश है कि साधु की संगत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जीव को प्रभु कभी विस्मृत नहीं होता और उस जीव के हृदय में सदैव आनंद बना रहता है, यथा :

पारब्रहमु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥
गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥१॥
हरि साचा सिमरहु भाई ॥
साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ *(पन्ना ६१६)*

साध की महिमा बेद न जानहि ॥

जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥
साध की उपमा रही भरपूरि ॥
साध की सोभा का नाही अंत ॥
साध की सोभा सदा बेअंत ॥
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥
साध की सोभा साध बनि आई ॥
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥

सातवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी साधु की महिमा को वेद-ग्रंथों की पहुंच से भी परे मानते हैं। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि साधु की उपमा वेद-शास्त्र भी नहीं जानते। वे तो जितना सुनते हैं उतना ही बखान करते हैं। साधु की महिमा अकथनीय है, बखान से परे है। साधु की महिमा तीनों गुणों से ऊपर है अर्थात् माया के तीनों रूपों-- सतो, रजो एवं तमो से परे है। ईश्वर में एकाकार हुए साधु की महिमा करना असंभव है। वस्तुत: साधु के समान कोई और है ही नहीं जिससे साधु की तुलना की जा सके। साधु की शोभा ईश्वर की तरह सर्वव्यापक है। जैसे परमेश्वर के गुणों का कोई अंत नहीं पा सकता, साधु की उपमा का अंत नहीं पाया जा सकता। साधु की उपमा केवल परमेश्वर से ही हो सकती है, अन्य किसी से नहीं। साधु की शोभा सबसे ऊंची है तथा बहुत बड़ी है। कहने का भाव, साधु की महिमा विचार-मंडल से परे है। उसको मापने का कोई पैमाना नहीं है। साधु की महिमा साधु को ही शोभनीय है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधु एवं परमेश्वर में कोई भेद नहीं अर्थात् दोनों ही एक रूप हैं।

वस्तुत: साधु की महिमा अकथनीय है, क्योंकि साधु और प्रभु दोनों अभेद हैं। जैसे ईश्वर को पूर्णतया नहीं जाना जा सकता ठीक वैसे ही सच्चे साधु का भी अंत पाना नामुमकिन है। साधु की संगत पारब्रह्म परमेश्वर का अनमोल तोहफा है और यह किसी पूर्व के पुण्य कार्यों से नसीब होता है, वाहिगुरु की रहमत सदका ही मुमकिन है। साधु की संगत आवागमन के चक्कर से मुक्त करवा देती है, यथा गुरबाणी का प्रमाण है :

साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥
आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥ *(पन्ना १०४)*

सबसे विलक्षण गुण साधु-संगत का यह बताया गया है कि साधु की संगत की बदौलत पारब्रह्म का सिमरन मिलता है और जहां प्रभु-सिमरन होता है वहां यमदूत भी नहीं भटक सकते, यथा गुरबाणी का सुंदर प्रमाण है :

अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥
साधसंगि जमदूत न भेटन ॥२॥
जीवन रूप अनूप दइआला ॥
रवण गुणा कटीऐ जम जाला ॥३॥
(पन्ना ७६०)

अकाल पुरख परमेश्वर की रहमतों का सदका जीव को सच्चे साधु की संगत नसीब होती है और सच्चे साधु की संगत विकारों से मुक्त करवाकर हरि-सिमरन में जीव के चित्त का जुड़ाव करवाती है। श्वास-ग्रास हरि के गुण-गायन-श्रवण करता हुआ जीव आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाता है और अपने बेशकीमती जीवन-मनोरथ में पूर्णतया कामयाब हो जाता है। ऐसे जीव का जीवन धन्य है। उसकी अवस्था को कोई बयान नहीं कर सकता। ❁

ख़बरनामा

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कृपाण के मामले पर प्रधानमंत्री को पत्र लिखा

श्री अमृतसर : ३० जुलाई : इटली सरकार द्वारा सिक्खों के धार्मिक व अभिन्न अंग 'कृपाण' के बारे में किए गए फैसले पर टिप्पणी करते हुए और इसको अति निंदनीय करार देते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि सरकार अपने इस फैसले पर पुन: विचार करे, क्योंकि उनके इस फैसले से सिक्ख-मनों को भारी ठेस पहुंची है तथा सरबत्त का भला मांगने वाली सिक्ख कौम के धार्मिक जज़बातों को कानून का हवाला देकर ठेस पहुंचाना किसी तरह से भी वाज़िब नहीं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि एक तरफ दुनिया के सबसे बड़े अमेरिका तथा कनाडा जैसे देश प्रवासी श्रमिक लोगों के धार्मिक तथा सामाजिक सरोकारों को पहल देते हुए प्रफुल्लित करने के लिए कानून अस्तित्व में ला रहे हैं, वहीं पूरे यूरोप में इसके विपरीत होता दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा है कि इस वक्त सबसे ज्यादा परेशानियां सिक्खों को झेलनी पड़ रही हैं। हवाई अड्डा हो या अदालत सुरक्षा के नाम पर कभी सिक्खों की दसतार उतरवाई जाती है और कभी कृपाण।

उन्होंने अफसोस प्रकट करते हुए कहा कि देश की आन-शान को कभी कोई अंदरूनी या बाहरी खतरा हो तो सबसे आगे होकर सिक्ख ही कुर्बानी करते हैं और जब उनके स्वगौरव के साथ खिलवाड़ की जाती है तो अपने देश की सरकार को याद भी सिक्खों को खुद ही करवाना पड़ता है।

उन्होंने इटली सरकार को ज़ोर देकर कहा है कि 'कृपाण' के मामले के बारे में दिए भाग्यहीन फैसले पर उनको दोबारा विचार करनी चाहिए तथा सिक्खों की भावनायों को समझना चाहिए, क्योंकि इटली देश की तरक्की के लिए सिक्ख भाईचारे का बड़ा योगदान है तो इस देश में बड़े-बड़े कारोबार करने वाले सिक्ख भी हैं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बड़े इकट्ठ में से पांच सिदकी (धैर्यवान) सिंघों की परख करने उपरांत उन्होंने पांच प्यारों के रूप में स्थापित किया था। गुरु जी ने खालसे को केश, कंघा, कछहिरा, कृपाण तथा कड़ा पांच ककारों के धारणी बनाया गया। इसलिए सिक्खों ने अंग 'कृपाण' को शरीर से किसी भी कीमत पर अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने मानयोग्य प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंघ को पत्र लिखकर मांग की है कि सिक्ख भावनायों को समझते हुए इटली सरकार से राजनीतिक पैमाने पर बातचीत करके इस मामले को प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाये।

अमेरिका के गुरुद्वारा साहिब में गोली कांड के दौरान मरने वाले सिक्ख श्रद्धालुयों के प्रति अरदास समागम हुआ

श्री अमृतसर : १० अगस्त : अमेरिका के राज्य विस्कानसिन के शहर ओक करीक के गुरुद्वारा साहिब गत ५ अगस्त को नसली भेदभाव तहत एक सिरफिरे गोरे द्वारा अंधाधुंध गोलियां चलाकर ६ श्रद्धालुओं को मारकर २० से ज्यादा को गंभीर जख़्मी कर दिया। मारे गये श्रद्धालुओं की आत्मिक शांति तथा जख़्मियों की सेहतयाबी के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा आज गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल में अरदास समागम करवाया गया। इस समागम में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंघ तथा

दिल्ली स्थित अमेरिका दूतावास से मिस्टर चैड ए थौरन बैरी विशेष रूप में शामिल हुए।

इस मौके जत्थेदार अवतार सिंघ ने संगत के विशाल इकट्ठ को संबोधन करते हुए कहा कि गुरु-घर में घटित हुई इस दुखदायक घटना से हृदय कांप गये हैं। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का एक वफ़द उनकी की अगुआई में दिल्ली स्थित अमेरिका दूतावास में राजदूत मैडम नैनसी पावेल को मिला था और उनको सिक्ख जगत की भावनाओं से वाकिफ़ करवाया था तथा सपष्ट कहा था कि अमेरिका की तरक्की में सिक्ख भाईचारे का अहम योगदान है। वहां सिक्ख बड़े-बड़े कारोबारी हैं। सिक्खों की जान-माल तथा धार्मिक स्थानों की सुरक्षा यकीनी बनाई जाए। उन्होंने राजदूत को ज़ोर देकर कहा है कि अमेरिका में सिक्खों की पहचान के लिए ठोस कदम उठाये जायें, क्योंकि ९-११ के हमले के पश्चात गलत पहचान करके बहुत सारे नसली हमले सिक्खों पर हुए हैं, उन्होंने बताया कि अमेरिका की राजदूत मैडम नैनसी पावेल ने उनको विश्वास दिलाया है कि पूरे अमेरिका में इस बात को यकीनी बनाया जायेगा और आगे से सिक्ख गुरुधामों की रक्षा प्राथमिकता के आधार पर की जायेगी।

उन्होंने कहा कि इसी तरह देश के विदेश मंत्री बी. एस. एम. कृष्णा को भी मिलकर सिक्खों की चिंता से अवगत करवाया गया, उन्होंने कहा कि भारत सरकार अमेरिका की सरकार से बातचीत करके सिक्खों की जान-माल तथा धार्मिक स्थानों की सुरक्षा को यकीनी बनाये। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा साहिब में घटित हुए इस गोली कांड के दौरान गुरुद्वारा साहिब के अध्यक्ष स. सतवंत सिंघ कालेके ने अपनी जान की परवाह न करते हुए बहादुरी से नसली गोरे का मुकाबला करके बड़े दुखांत को रोका व श्रद्धालुओं की जान बचाते हुए खुद नसली गोरे की गोलियों का शिकार हो गये। जो प्रशंसा योग्य है। उन्होंने कहा कि इस बहादुरी कि खातिर उनको 'सोन-तगमे' से सम्मानित किया जायेगा।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि अमेरिका के पुलिस अफसर लेफ़्टिनेंट बरायस मरफी को नसली गोरे द्वारा ९ गोलियां मारकर गंभीर रूप में जख़्मी किया गया। लेफ़्टिनेंट मरफी को भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा 'सोन-तगमे' से सम्मानित किया जायेगा। दिल्ली से जो रागी सिंघ इस गोली कांड में मारे गये हैं, उनके परिवारों को भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा दो-दो लाख रुपये सहायता के तौर पर दिए जायेंगे।

समागम के दौरान श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने संगत को संबोधन करते हुए कहा है कि उन बिछुड़ी रूहों को श्रद्धा सुमन व जख़्मियों की सेहतयाबी के लिए सारे सिंघ साहिबान द्वारा अरदास करते हैं। उन्होंने कहा है कि इस दुखदायक घड़ी में अमेरिका सरकार ने सिक्ख कौम का साथ दिया है, इसलिए मैं अमेरिका सरकार के राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा का धन्यवाद करता हूं।

अरदास समागम में दिल्ली स्थित अमेरिका दूतावास के मिस्टर चैड. ए थौरन बैरी पहला राजनीतिक सचिव, ए सुकेश सलाहकार एंबैसी ऑफ युनाइट्ड स्टेटस विशेष तौर पर पहुंचे। मिस्टर चैड. ए थौरन बैरी द्वारा अमेरिका की भारत में राजदूत मैडम नैनसी जे पावेल का लिखा शोक-संदेश पढ़ा।

इस मौके सिंघ साहिब ज्ञानी जसविंदर सिंघ मुख्य ग्रंथी श्री हरिमंदर साहिब, भूतपूर्व जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी केवल सिंघ के अलावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. दलमेघ सिंघ, अतिरिक्त सचिव स. सतबीर सिंघ, स. मनजीत सिंघ सहित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अन्य अधिकारीगण, समूह स्टाफ तथा संगत उपस्थित थी।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०९-२०१२